कालचक्रक पटरी तर

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ऑनलाइन बुक स्टोर www.navarambh.com पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-934042-4-4

कालचक्रक पटरी तर

(मैथिली कविता-संग्रह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : 200 रु.

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

KaalChakrak Patri Tar
Maithili Poems By **Kamini**
First Edition : 2022, Price : Rs 200/-

समर्पण

ई पोथी
अपन पिताकेँ
जे भोरसँ
साँझ धरि
खेतसँ खरिहान धरि
खटैत रहलाह
शीत-रौदमे
भीजैत रहलाह
आ सदिखन
हमरे सभ लेल
सोचैत रहलाह...

कामिनी

.

आत्मकथ्य

बात कतयसँ शुरू करी आ कतय समाप्त, दुनूक बीच उहापोहक स्थिति बुझना जाइत अछि हमरा। जीवन सदैव हमरा लेल सहस्त्रमुखी धार रहल जकरा समटब, बान्हिक राखब असंभव भेल हमरा लेल। छोट-छोट दुःख, छोट-छोट सुख एतेक द्रवित, एतेक उत्साहित करैत रहल जकरा सम्पूर्ण रूपमे शब्दमे गाँथब संभव तऽ नहि भेल हमरासँ मुदा विह्वलता आ संबलता ओ जरूर देलक जकर परछाँही हमरा कवितामे देखल जा सकैत अछि। कविता लिखबाक कोनो सूत्र हमरा नहि पता आ नहि आगू-पाछू कोनो एहन ब्रह्मगुरु जे हाथ पकड़ि आगू लऽ जाइथि।

कविता हमरा लेल दिनचर्या रहल, दैनिक जे आवश्यक होइत अछि प्रत्येक मनुखक लेल। मोनमे जे बात आयल ओकरा लेखनीबद्ध कऽ लेलहुँ बिना कोनो लाग-लपेटकेँ। अपना आपमे सिमटैत शहरी समाज जतय एकक दुःख दोसर लेल अर्थहीन होइत अछि, ओतय अपना आपसँ संवाद करक माध्यम हमरा कविते बुझना गेल। परिस्थितिवश उपजल क्रोध, क्षोभ, मोह, वैराग्य सभ कवितेक माध्यमसँ बाहर निकलैत गेल। कहक लेल तऽ हमरा चारूकात सहसहाइत लोकक भीड़ अछि मुदा पाथरक लोक सन बेसी सम्वेदनाहीने बुझना जाइत अछि। ई केहन युगमे हम जीबि रहल छी, जतय सुख-सुविधाक अनेको साधन लोक लग उपलब्ध अछि मुदा लोकसँ लोक दूर भऽ गेल। सभ अछि परित्रासित, सभ अछि दुःखी, सभ अछि अपना आपमे एसगर मुदा ककरो लग कियो जाइत नहि अछि। ककरो हाल कियो पुछैत नहि अछि। सभ एक-दोसारकेँ ठकैत अछि हम सुखी तऽ हम सुखी!

गाम-घर, स्कूल-कॉलेज सभ ठाम सभसँ हमरा प्रेम भेटल। एहि मामिलामे हम सदैव सौभाग्यशाली रहलहुँ। किछु प्रेम संवारबो केलक तऽ किछु बिगाड़बो केलक। प्राइमरी स्कूलक मास्टर साहब श्री रामगोविंद जीक अत्यन्त प्रेमक प्रभाव छल जे हमरा दू कानसँ बीस कान धरिक खाँत नीकसँ कहियो नहि आयल। सभ बच्चाकेँ बीस-बीस करची मारथि तरहत्थीपर

जकरा दू कानसँ बीस कान धरि नहि आबय नीकसँ आ हमरा बेरमे करची ऊपरे छीप लैथ। कहैथ ''कोना मारियै, हाथ कतेक कोमल छै, एन-मेन फूले सन''। ओ हाई स्कूलक मास्टर साहेब श्री सुशील झा जीक अगाध प्रेमे छल जे बड़ मनोयोगसँ बिहारी आ रहीमक एक-एक दोहा पढ़ाबथि। घोरि-घोरि अर्थ पियाबथि। जँ कोनो कारणवश नहि जा पाबी स्कूल कहियो तऽ दलानपर आबि ओ छूटल क्लासक अध्याय पढ़ाबथि। ओ कॉलेज महक माननीया मैडम संध्या जीक स्नेह छल जे साओन-भादवोक उमरैत-घुमरैत मेघसँ लड़ैत क्लास रूम धरि आबथि आ बड़ सरसतासँ शकुन्तला आ दुष्यन्तक प्रेम कथा ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' पढ़ाबथि।

एकटा सामान्यो लोकक जीवन बहुत लोकक प्रेम आ उपकारसँ भरल रहैत अछि, जकर मोल चुकयब संभव नहि। जीवनक प्रत्येक पल एक-दोसराक प्रेम आ सहयोगपर टिकल अछि। जाहिमेसँ एको स्तंभ ढहि जाय तऽ डगमगाहटि सहजहि। ई डगमगाहटि हमर कवितामे जगह-जगह देखल जा सकैत अछि। जीवनमे सभ दिन सभसँ प्रेम भेटबे करत ई संभव नहि! लोक परिस्थितिक हिसाबसँ बदलैत रहैत अछि, जकर प्रभाव सभ सम्बन्धपर पड़ैत अछि। जाहिसँ प्रेम आ घृणा दुनूक स्थिति उत्पन्न होइत अछि।

कविता समस्याक समाधान नहि, ओहि लेल जमीनपर कार्य आवश्यक। सामान्य मनुखक भूख, सामान्य मनुखक दुःख कविता नहि मेटा सकैत अछि मुदा कवि कवितेकेँ अपन माध्यम बना आम लोकसँ जुड़ैत अछि। ओकर सुख-दुखकेँ शब्दमे गढ़ैत अछि। वैह ओकर अस्त्र-शस्त्र बनैत अछि, कठोरसँ कठोर संघर्षक लेल। ई बात हमरो कवितामे देखल जा सकैत अछि। मोन पड़ैत अछि अपन कॉलेजक मित्र शांभवी जे कहय हमर कविता पढ़ैत ''कामिनी! तुम सेना तैयार करोगी और मैं उस सेना में काम करूँगी। तुझमें और मुझमें बस यही अन्तर है।'' बहुत गुणग्राही स्थिरचित्त रहय शांभवी। आब कतय अछि पता नहि!

हमर जीवन एतेक लोकक प्रेम, एतेक लोकक उपकारक तरमे डूबल अछि जकर उल्लेख करब तऽ आत्मकथाक एकटा स्वतंत्र रूप (पोथी) भऽ जायत, जकरा हम भविष्यक गर्भमे सुरक्षित रखैत छी। हम हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी, ओहि सभ माननीय आत्मीय जनकेँ जिनक

प्रेम-सहयोगक बलेँ हम एतय धरि पहुँचलहुँ जे हमरा सन सामान्य लोकक लेल असंभव छल। विश्वास अछि आगुओ हमरा एहने लोकक सहयोग अहिना भेटैत रहत। जाहि बलेँ ई चारिम कविता-संग्रह लऽ हम उपस्थित भेलहुँ अछि, ओहि बलेँ हम अपन पाँचमो कविता-संग्रह लऽ उपस्थित होयब।

कामिनी

.

कालचक्रक पटरी तर : 8

काव्य-क्रम

1. पिता-1
2. पिता-2
3. पिता-3
4. पिता-4
5. पिता-5
6. पिता-6
7. गुदरीक दान
8. अमोघ शक्ति
9. प्रतीक्षा
10. हिंसा-अहिंसा-1
11. हिंसा-अहिंसा-2
12. बलचनमा
13. समय जे नहि कराबय
14. गंगा
15. निर्णय
16. पटरी तर
17. पितामह
18. घरहीन
19. पहिचान
20. सरकार
21. बड़की काकी-1
22. बड़की काकी-2
23. ताण्डव
24. ओवरब्रिज
25. बगेड़ी
26. शीर्षकहीन
27. गाम-1
28. गाम-2

29. गाम-3
30. अलग रास्ता
31. जड़िविहीन शाखा
32. चक्रव्यूह
33. आत्माक आवाज
34. पाँच इंचीक देबाल
35. धारा एक सए चौआलिस
36. यमुना
37. शंखनाद
38. दुमुँहा साँप
39. कल्पवृक्ष
40. संवेदना
41. हृदय
42. संतान
43. फोरलेन
44. शब्द
45. हम नहि चाहैत छी
46. दीयाबाती
47. बंदीगृह-1
48. बंदीगृह-2
49. अहाँक राजमे
50. त्राहिमाम्
51. फाटल वस्त्र
52. कर्तव्यक निर्वाह
53. आस्था

पिता-1

बड़क गाछ जकाँ
चतरल अछि
पिताक स्नेह
जकर शीतल छत्रछाया तर
पलैत-बढ़ैत अयलहुँ अछि हम

कतबो आन्ही-बिहाड़ि हो
कतबो पानि-पाथर हो
कतबो शीत-रौद हो
हमरा लेल
कोनो हाही-बिरवा नहि
बीति जाइत अछि दिन
बड़ सहजतासँ
जहिना दौड़ैत अछि
कुशल इंजीनियर द्वारा
बिछाओल पटरीपर
समय-चक्रक रेल
हजारो बिपति-बाधाक बादो
बड़ सहजतासँ

पिता जे देखने छलाह
हमरा लेल सपना
पिता जे सोचने छलाह
हमरा जीवनक मादे
से सए प्रतिशत तऽ नहि
तहन अस्सी प्रतिशत तऽ

जरूरे भेल पूर

एकटा सामान्य लोकक
जीवने केहन होइत अछि
अपना बाड़ीक
पटुआ जकाँ
कखनो तीत
तऽ अपन गाछक
आम जकाँ
कखनो मीठ

शेयर बाजारक
उतार-चढ़ाव जकाँ
नहि ततेक ऊपर चढ़ैत अछि
की छुबि नहि सकी
नहि ततेक निच्चाँ खसैत अछि
की लतखुरदनि कऽ दिय कियो
सामान्य लोकक जीवन होइत अछि
एकदम सामान्य
अपनहि घरक
नून-पानि सन
एकदम घुलल-मिलल

सोचैत छी
जाहि दिन
खसि पड़त
ई विशाल
बड़क गाछ
जेना कि बात-बातपर
पिता आब बजैत छथि

''हमर कोन ठेकान
कखन छी, कखन नहि''
आ हमरा माथपरसँ
उठि जायत
ई विशाल छत्र-छाया
ओहि दिन
कोना सम्हारि सकब हम अपनाकेँ
जे टहटहौआ रौदमे
चनकिकऽ खसैत
अंडीक बिया जकाँ
कतय-कतय खसत
हमरा अपनहुँ नहि पता चलत

ओहि दिन
हमरा के कहत स्नेहसँ
''दाय, तूँ चिन्ता नहि कर!
जामे हम जीबैत छी!''

पिता-2

पिता चुप्प छथि
ई कोनो पैघ बात नहि
पैघ बात तऽ ई
की ई चुप्पी
पिताक प्रकृतिक
विरुद्ध अछि

हमेशा अपने इच्छे
बजै बला पिता
टुक-टुक तकैत
सभ, नीक-बेजायपर
सहमति व्यक्त करैत
आइ चुप्प छथि

पहिने जखन पिता
बजैत छलाह
तऽ ककरो वशक
बात नहि छल
कि हुनका जवाब देत
हुनका चुप्प कराओत
गलतोकेँ सही
आ सहियोकेँ गलत
साबित करैक क्षमता
रखैत छलाह पिता

जाहि बाट धऽकेँ
चलैत छलाह पिता
लोक पैर दाबिकऽ

भऽ जाइत छल कात
फल्लाँ जीक समक्ष
के ठाढ़ होयत
आँखिसँ आँखि मिला
के बात करत
पिताक दबदबा
शहंशाहियतसँ भरल
रहैत छल हरघड़ी
आ अपना आपकेँ ओ
शहंशाहसँ कम
बुझबो नहि करैत छलाह

जखन कि
सत्य तऽ यैह छल
एकटा आम पिता सन
छलाह ओ
हमरा सभक पिता
कने कठोर, कने कोमल

सभ दिन मायकेँ देखलहुँ
पिताक व्यवहारसँ
असन्तुष्ट उखड़ल-उखड़ल
अपन भाग्यकेँ कोसैत
हारि-थाकिकऽ
वर्तमानसँ समझौता करैत

पिता!
जिनक दिन
खेतक आड़िपरसँ
शुरू होइत छल
आ समाप्तो खेतेक आड़िपर
ओ दिन-दुनियाँसँ बेखबर

घुरैत छलाह घर
मुन्हारि साँझ भेलाक बाद
धुआँ-धुआँ भेल
अपन सभ सुख-सेहन्ताकेँ
गोबरक छिट्टामे
माथपर राखि

जे कोन-साग
जे तीत-मीठ
अबैत छलनि आगू
तकरा ग्रहण करैत
शिवकेँ सुमिरैत
सूति रहैत छलाह
मचानपर
पुनः जगबाक लेल
आइ वैह पिता
चुप्प छथि
समय सापेक्ष भेल

हम जनैत छी
परिस्थिति अनुकूल
नहि रहल आब
पिताक बजबाक जोग

धरि कतबोक
विपरीत हो परिस्थिति
पिताक चुप्पी
हमरा नीक नहि लगैए
भीतरे-भीतर घुन जकाँ
खोखला करैए!

पिता-3

सम्पूर्ण परोपट्टामे
फल्लाँ जीक नामे
प्रसिद्ध पिता
आइ चिन्हल जाइत छथि
बेड नंबर-1क नामसँ
जेना अन्य मरीज
चिन्हल जाइत अछि
दू, तीन, चारिक नामसँ

आइ.सी.यू.क
एक नंबर बेडपर
अर्धचेतनावस्थामे
पिता पड़ल छथि
सात दिन
सात रातिसँ

डाक्टर अबैत अछि
बल्ड प्रेशर जँचैत अछि
धड़कन नपैत अछि
नाड़ी छुबैत अछि
नीक-बेजाय
जे बुझाइत छै
लिखिक' दबाइ
चलि जाइत अछि

बड़ आशासँ

पुछैत छी हम
''सर इनकी हालत कैसी है?''
ओ कहैत अछि
''भगवान पर भरोसा रखिये
हम लोग तो
मात्र कोशिश कर सकते हैं
इन्हें दुबारा हर्ट अटैक हुआ है
कुछ निश्चित
कहा नहीं जा सकता''

से सुनितहि
परत-दर-परत
दड़कय लगैत छी हम
तैयो साहस करैत
पुछैत छी दुबारा डाक्टरसँ
''सर फिफ्टी परसेन्ट भी
चांस है बचने का''
आ असमंजसमे पड़ल
ताकय लगैत छी
डाक्टरक मुँह
डाक्टर कहैत अछि
''हाँ, इतना तो चांस है ही
इनके बचने का''

एतबा सुनितहि
मिझाइत दीपक बाती सन
लगैए कियो फेर
घुसका देने हो आगू
ओकर टेमीकेँ
जरबाक लेल

हम पिताक लग अबैत छी
आ जोरसँ कहैत छी
''भैया! हमरा चिन्हलहुँ
हम कामिनी''
(हम सभ काकाक देखा-देखी
बच्चेसँ पिताकेँ भैया कहैत छी)
पिता किछु नहि बजैत छथि
मुदा लगैए
पिताक अन्तर्मन
हमरा सुनि रहल अछि
आ एकटा सुखद एहसासक
स्पष्ट रेखा
हुनका मुँहपर
पसरि जाइत छनि

हम हुनकर
माथपर हाथ राखि
पुनः कहैत छी
''भैया! हम कामिनी''
लगैए एहि बेर
पिताक ठोर बुदबुदाइत
कहने हो ''कामिनी''

एकटा सन्तुष्टिक भाव
पसरैत अछि
हमरा मुँहपर
पिता! एहनो विकट परिस्थितिमे
जतय दिन-दुनियाँक कोनो होशो-हवाश
नहि छनि हुनका
हमरा चिन्हैत छथि

हुनकर रोइंयाँ-रोइंयाँ
हमरा अनुभव करैत अछि

आगू की होइबला अछि
हमरा नहि पता
हमरा तऽ एतबे पता अछि
जाबत धरि चलैत रहतनि
पिताक साँस
हम सुरक्षित अनुभव
करैत रहब अपनाकेँ
एहि बियावान जंगलमे
जतय भावना आ संवेदना
बिकाइत अछि
आना-आनाक भावे
तराजूपर तोलि-तोलिकेँ !

पिता-4

आन्ही-बिहारिमे खसल
विशाल बड़क गाछ सन
धराशयी भेल पिता
अर्धचेतनावस्थामे पड़ल
की सुनैत छथि
की बुझैत छथि
हमरा नहि पता

हमरा तऽ एतबे पता अछि
हुनक स्थिति
ठीक नहि छनि
भारी कष्टमे छथि ओ
जतयसँ चाहियोकऽ
हुनका बाहर
नहि निकालि पबैत छी हम

भारी विपत्तिमे पड़ल
हमर मोन
छटपट-कछमछ करैए
की करी आ की नहि
कखनो डाक्टर लग जाइ छी
कखनो भगवानकेँ गोहरबैत छी
मुदा तैयो
पल-पल छीजैत
पिताक स्थितिमे
नहि होइत अछि

कनियों सुधार
लगैए छिजैत पिताक संग-संग
छीजि जायब हमहुँ शीघ्रहि

आँचरक कोरसँ
नोर पोछैत माय
कहैत छथि
''कामिनी, हाथी हथिसारे गेलौ
घोड़ा घोड़सारे
अपने की खसला
सभ राज-पाट
करोट लागि गेलौ''

हम जनैत छी
पिता ने कोनो राजक
राजा छलाह
आ ने दलानपर
बान्हल छल
कोनो हाथी-घोड़ा

पिता! एकदम सामान्य
गृहस्थ छलाह
जकर राज-पाट छल
अपन खेत-खरिहान
आ प्रजा छल
अपन परिवार
जकरा सम्हारबामे
समुचित व्यवस्थामे
अपन जीवन

गुदस्त कऽ देलाह पिता
बिना कोनो रोषकेँ

मायक आँखिसँ
झहरैत छै साओनक बुन्न
जकरा ओ अपनहि पोछैत
कहैत अछि
''दाय गे बर, अनधैर्य होइए
हुनका एहि हालतमे देखि
आब ककरा कहबै
आ के सुनत
हमर मोनक बात''
की कहियै आ कोना कहियै
मायकेँ
की अनधैर्य तऽ हमरो होइए आब
एहि तरहें पिताकेँ
धराशयी भेल देखि-देखि

पिता छलाह तऽ
बाँचल छल हमर घर
सुख-दुखक संगी
बरखा-बुन्नीक छाहरि
पिताक संग-संग
धराशयी भऽ गेल
सभ सम्बन्ध
अपन गाम-घर
अपन अँगना दलान
जतयसँ खोइँछामे
दूभि-धान दऽ
विदा कयने रही हमरा अहाँ

आ सान्त्वना दैत पिता
कहने रहथि
''कामिनी! एहि सम्पत्तिक
आधाक अधिकारिणी छें तूँ
जाबत हम जीबैत छी
के हटेतौ तोरा''

माय! अपना लेल
अहाँक घरमे
हम स्थान तकैत छी
खोइँछा भरि नहि
मुट्ठीयो भरि मान तकैत छी
तकैत छी
भाइक भावनामे
बेर-बेर अपनाकेँ

सत कहैत छी
माय हमरा
कतहु किछु
नहि देखाइत अछि
नहि अहाँक घरमे
अपना लेल स्थान
नहि भाइक भावनामे
अपना लेल मान
पिताकेँ जीबितहिं
लगैत अछि
अन्जान-अनचिन्हार
भऽ रहल छी हम
एहि घरक लेल

लगैए दुःख-दर्दक
उधियाइत कोशीक वेग
बहेने जा रहलए
अपना संग-संग
कत अर्रा लागब
नहि पता
के सम्हारत
नहि पता

हमरा तऽ एतबे पता अछि
जहिना आइ
हम विवश छी
सभ किछु भोगबा आ सहबाक लेल
तहिना एक दिन
अहूँ विवश भेल होयब माय
आखिर अहूँ ककरो
बेटिये तऽ छी!

पिता-5

पिता अहाँ नहि छी
घर-अँगना
दलान-बथान
खेत-खरिहान
कतहु नहि छी अहाँ

एहिये हाथसँ
चढ़ाक' एलहुँ
अहाँकेँ पचकठिया
आ इएह आँखि
जरैत देखलक
अछियापर अहाँकेँ

धुआँ-धुआँ भेल छल
आमक गाछी
पाटल छल
सम्पूर्ण परोपट्टा
चिराइन गंधसँ
जकर साक्षी अछि
हमर साँस एखनो

सती पोखरिमे
एक डूब दऽ
देने रही हम स्वयं
अपना हाथसँ तिलांजलि
आ घुरल रही जखन

बिना पाछू तकने अँगना
दिनेश काका कहने रहथि
‘‘कामिनी! आगि, पानि, पाथर
आ लोह छुबि
भऽ जाउ पाथर आइसँ
कऽ दियनु भाइकेँ
एहि सांसारिक
माया-मोहसँ मुक्त

पिता! हम आगि, पानि, पाथर
आ लोह छुबि
संकल्प तऽ लऽ लेलहुँ
अहाँक माया-मोहसँ
दूर रखबाक
धरि हारि गेलहुँ
जतेक बेर अहाँकेँ
हम अपनासँ
दूर करैत गेलहुँ
अहाँ ओतेक बेर
आर लग, आर लग
अबैत गेलौं

सत कही तऽ
चारूभर नजरि खिरबैत छी
अहाँ एहन निःस्वार्थ
प्रेम दै बला
कहाँ भेटैत अछि कियो
एतय तऽ आब
प्रेमो व्यापार भऽ गेलैक अछि
पहिने लोक

नफा-नोकसान तकैए
तहन एक-दोसरासँ
प्रेम करैए

अहीं कहू
एहन दुःसह वातावरणमे
असगर कोनाक’
जीयब हम
अहाँ एहन निःस्वार्थ
प्रेम करय बला दोसर
कतयसँ आनब हम
अहाँ छलहुँ तऽ
बड़क विशाल छाहरि बनि
रोकने छलहुँ
‘‘हमरा लग अबै बला
सर्दी-गर्मी, पानि-पाथर
सभकेँ

आब पीपरक
पातो की सिहकैए
सभ विश्वास
सभ धैर्य
डोलय लगैए
पिपरेक पात सन

पिता! एतेक टाक जीवनमे
एतेक असहाय
कहियो नहि अनुभव
कयने छलहुँ अपनाकेँ
एकटा अहाँकेँ नहि रहने

लगैए अनाथ भऽ गेलहुँ
सहसहाइत लोकक बीच

पिता! होइए
जोरसँ दी अहाँकेँ हाक
आ अहाँ प्रतिउत्तरमे कही
''कामिनी तूँ चिन्ता नहि कर
हम छी एखन जीबैत''
पिता! हर आहटिपर लगैए
अहाँ आबि रहल छी
ओहिना हलचलाइत
हँसैत-बजैत
कखनो नाकेपर
तामस लेने तुनकैत

पिता! अहाँकेँ जयबाक छल
अहाँ गेलहुँ
धरि अहाँकेँ
मरल मानि
कोना जीबि सकैत छी हम

अहाँ रहब सदैव जीबैत
हमर भावना आ संवेदनामे
हमर हर सुख
आ हर दुःखमे
जहिना पहिने छलहुँ जीबैत...!

पिता-6

जँ वास्तवमे
सपनाक अस्तित्व होइत हुअ
तऽ नहि यथार्थमे
सपनेमे सही
पिता! अहाँ अबितहुँ
जँ घंटा-आध घंटाक
पलखति नहि हुअ तऽ
पलो भरिक लेल

अहाँ करितहुँ
अपन चिंतामे
हमरा शामिल
आ रखितहुँ स्नेहसँ
माथपर हाथ
आ कहितहुँ
''बतहिया बेटी हमर
किछु नहि बुझैत छै
कोना चलतै एकर जीवन''

निकालितहुँ गोल गल्लाक जेबीसँ
सए-दू सएक नोट
आ हर्षसँ दैत कहितहुँ
''हले, जो बच्चा सभकेँ
कीनि दीहिन ग' किछु बाजारसँ

पिता! सभ किछु तऽ

ओहिना अछि
जहिना पहिने छल
मुदा एकटा
अहाँकेँ नहि रहने
सभटा वीरान लगैए

पिता! जँ अबितहुँ
एको बेर घुरिक'
हमरा लग
तऽ कहितहुँ
ओ सभ बात
जे अनकहल रही गेल!

गुदरीक दान

अलख निरंजन
अलख निरंजन करैत
अलख जगबैत
अबैत छल जोगी
एक कान्हपर
गुदरीक मोटरी
दोसर कान्हपर
घुना टँगने
आ कोनटापर ठाढ़ भऽ
गाबय लगैत छल निर्गुण
''सभ के रे बेरिया गोपीचंद
पार लगेलही रे की
आरे हमरा के बेरिया
कियै डुबेलही रे की''
निर्गुण सुनितहि
मायक आँखिसँ
बहय लगैत छल
दहोबहो नोर

जखन होइत छल
निर्गुण समाप्त
जोगी कहय लगैत छल
''माता! भिक्षा दो
माता भिक्षा दो''
ओहि भिक्षामे योगी
किछु विशेष नहि

मात्र गुदरी मँगैत छल
धोती आ साड़ी
अपनहि आँचरसँ
अपन आँखि पोछैत
माय पुछैत छलीह
''योगी अपने कतय रहैत छियै
की नाम भेल''

बड़ निरपेक्ष भावसँ
योगी कहैत छल
''माता' फकीर का
कौन नाम
कौन पहचान
जहाँ रात हो जाय
वहीं अपना घर''
माय सोचैत छलीह
योगी कतेक वैरागी अछि
कतेक निर्मोही अछि
भिक्षामे मात्र
फाटल-पुरान
गुदरी मँगैत अछि

माय हलसि-हलसि
करय लगली दान
दानमे जाए लागल
घरक सभ गुदरी-पुरान
जतेक योगी अबैत छल
मात्र गुदरी मँगैत छल
धीरे-धीरे एक दिन
गुदरीक रहस्य खूजि गेल

एक कान, दू कान
काने-कान पसरि गेल
''की योगी गुदरी बेचैत अछि
धुनी रमाय गाँजा पीबैत अछि''

ताहि दिनसँ
माय बंद कऽ देलीह
गुदरीक दान
आ ओहि गुदरीकेँ
बदलि-बदलि
कीनय लगलीह
स्टीलक बर्तन-बासन
कियैक तऽ हुनक विश्वासक संग
जे भेल छल घात

आइ कियो हमरो
श्रद्धा-विश्वासक संग
कऽ रहल अछि घात
मनक सर्वोच्च आसनपर बैसि
स्वयं भऽ गेल अछि पथभ्रष्ट
सोचैत छी
अपन श्रद्धा-भक्तिकेँ
बदलि-बदलि
कोन बरतन
कीनब हम
की ओहिमे
परोसब हम!

अमोघ शक्ति

सत कहैत छी
जँ दुर्वासा ऋषि जकाँ
रहितय वाणीमे
अमोघ शक्ति
तऽ आँजुरमे जल भरि
दऽ दितियै शाप
आ जराकऽ राख कऽ दितियै
ओहि सभ व्यवस्थाकेँ
जे आम आदमी लेल
नहि छोड़ैत अछि
एको बीत जगह

तहस-नहस कऽ दितियै
ओहि सभ बुद्धिजीवीकेँ
जे बैसल-बैसल बनबैत अछि
अपन स्वार्थक चक्रव्यूह
आ जाहिमे फँसैत अछि
बेगरता प्रधान लोक
जे मारल जाइत अछि अकलबेरामे
ओहि शिखण्डीकेँ हाथेँ
जकर छल-कपट
इतिहास प्रसिद्ध अछि

एके बेर हौँड़ दितियै
अमृत कलशमे
बासमती, सतरिया

आ तुलसी फूलक चाउर
आ मौहक्काक खीर जकाँ
बाँटि दितियै
सभक तरहत्थीपर
एक-एक कऽर
ने ककरो कम
ने ककरो बेसी

राजाक बगियापर
जे पहरुएक अधिकार छैक
एखन धरि
तकरा साधिकेँ
लगबितियैक निशान
आ पहरुमुक्त कऽ
खोलि दितियै
आम आदमीक लेल
ओकर मुँह
जकरा जतेक मोन होइतै
खइतै-खेलैतै

किछु खनहन
किछु मोटरी बन्हनकेँ
जे परम्परा
चलि आबि रहल अछि
अतीतसँ
एहि देशमे
ओकरा ध्वस्त कऽ
स्थापित करितहुँ
आम आदमीक लेल
''सर्वजन हिताय

सर्वजन सुखायक''
अरुण स्तम्भ
मनमे ई पछतबो
त' नहि रहितय
मनुख भऽ केँ
मनुखक लेल
किछु केलहुँ नहि...!

प्रतीक्षा

एक दिन
दू दिन
आइ तेसर दिन छी
पड़ल अछि खिड़कीपर
अन्नक दाना ओहिना
जहिना हम देने रही

हमर हीत-मीत
हमर सखा-सम्बन्धी
हमर बाल-बच्चा सन
अपन खास
बगड़ा-पौरकी आ लुक्खी
जे अबैत छल
सभ दिन अहल भोरे
हमरा भनसा घरक खिड़कीपर
आ चीं-चीं करैत
माँगय लगैत छल
अन्नक दाना
आ अन्न भेटितहिं
खाय लगैत छल
लुप-लुप

ओकरा अन्न दैत
ओकरा खाइत देखैत
सत कहैत छी
परम सन्तोष

होइत छल हमरा
ओ कहिया आ कोना
हमरा जिनगीक हिस्सा भऽ गेल
पता नहि

ओ आइ तीन दिनसँ
देखा नहि रहल अछि
ओकर कलरव
किम्हरोसँ
सुना नहि रहल अछि
पता नहि
ओ कतऽ गेल
आ की भेलै
ओकरा संग हादसा
एतय किछु भेनाय
असंभव नहि अछि
किछु ने किछु
एतय होइते रहैत छै

एकटा आशंकासँ
घिरल अछि मोन
जे दिनक चैन आ रातिक निन्न
हरण कएने अछि
पता नहि कतय
आ कोन हालमे
होयत ओ सभ
के दैत हेतैक
ओकरा सभकेँ
अन्नक दाना

के बुझैत हेतैक
ओकर बात

हे! सखा-सखी वृन्द
अहाँकेँ हमर भावना
आ सम्वेदनाक सप्पत छी
जँ सुनाइ पड़य कतहु
ओकर आवाज
जँ देखाइ पड़य किम्हरो
ओकर छाहो
तऽ कहबै ओकरा
हम आँचर पसारि
ओकर घुरि अयबाक
प्रतीक्षा करैत छी आइयो
जहिना काल्हि करैत छलहुँ।

हिंसा-अहिंसा-1

भीठबा खेतक
धूरपर
एकटा विशाल
पीपरक गाछ छल पहिने
हमरा गाममे
जहियासँ ज्ञान भेल
देखैत आयल रही
ओहि गाछकेँ
एक गाछमे
कएक गाछकेँ समेटने ठाढ़

पैघ-पैघ डारि वला
ओ गाछ
झमटगर पात वला
ओ गाछ
हजारो चिड़ै-चुनमुनीक
खोंता बला
ओ गाछ
जकर पातसँ
बनबैत छलहुँ घिरनी
आ उड़बैत छलहुँ जकरा
पुरबा-पछबा बसातमे
जकरा जड़िमे बैसि
बनबैत छलहुँ
माटिक महादेव
आ पुजैत छलहुँ

श्रद्धा-सुमनसँ
जकरा डारिपर चढ़ि
गबैत छलहुँ
राग-रंग भरल गीत
जकरा छाहरिमे
हरवाहा-चरवाहासँ लऽ केँ
बाट-बटोही तक
सुस्ताइत छल

जकरा मादे
एकटा अफवाहो
सुनबामे अबैत छल
एकटा ब्रह्मपिशाच
देने अछि डेरा
ओहि पीपरक गाछपर
आ रातिकेँ बारह बजे
दैत अछि ओ हाक
तीन बेर
गामक लोककेँ
अलग-अलग नामसँ
''हउ फल्लाँ हउ फल्लॉ
कतऽ छऽ हउ''
डरे सकदम्म
गामक लोक
किछु नहि बजैत छल
तरे-तर गुड़-चाउर फँकैत छल

ओ पीपरक गाछ
आब नहि अछि
भीठबा खेतक धूर पर

कहियासँ नहि अछि
हमरा नहि पता
हमरा तऽ पता चलल आइ
जखन कएक सालक बाद
आयल छी गाम
अपन खेत-खरिहान
तऽ आँखि ठहरि गेल
ओहि विरान भेल जगहपर
जतय कहियो
पीपरक विशालता
पसरल छलैक

किछु हरवाहा-चरवाहा
एम्हर-ओम्हर भटकैत
छाहरिक खोज करैत
जरूर नजरि आबि रहल अछि
जकरेसँ सुनबामे
आयल ई बात
की किछु रुपैया-पैसाक खातिर
ओहि पीपरक गाछकेँ
बेचि देल गेलैक
टिम्बर बलाक हाथेँ
जे डारि सहित
जड़ियो उखारिकेँ लऽ गेलै
एहि तरहें
उजाड़ि देल गेलैक
चिड़ै-चुनमुनीक खोंता
ध्वस्त कऽ देल गेलैक
हरवाहा-चरवाहाक धर्मशाला
बाट-बटोही रौदायले

बढ़य लागल आगू
सुनने तऽ इहो छी
एहने कोनो
विशाल पीपरक गाछ तर
सिद्धार्थ बुद्धत्व
प्राप्त केने छलाह
अहिंसाक पाठ
पढ़ने छलाह
अंगुलिमाल सन
क्रुर-कठोर
हिंसक मनुखकेँ
अहिंसक बनेने छलाह

से बुद्ध!
सोचनहियो नहि हेताह
सपनामे
ओ पीपरक गाछ
एक दिन
भऽ जायत स्वयं
हिंसाक शिकार
ककरो भीठबा खेतक धूरपर...!

हिंसा-अहिंसा-2

एकटा विशाल
बड़क गाछ छल
पहिने हमरा गाममे
जकर जड़िकेँ पुजैत छल
गामक नव विवाहिता
अति पौराणिक
वटसावित्रीक कथा
सुनैत-सुनैत
आ मँगैत छल वरसँ वर
सत्यवान सन सौभाग्य
आ सावित्री सन संकल्प
अबैत-जाइबला लोकक माथ
झुकि जाड़त छल अपनहि
श्रद्धा आ विश्वाससँ

ओहि बड़क गाछक प्राचीनता
मात्र जनश्रुति छल
असली जानकार तऽ
भऽ गेल छल काल कवलित
कहिया नहि कहिया
एकरो सुनिश्चितता
नहि छल बूझल
तात्कालिक लोककेँ

लोककेँ तऽ
एतबे बूझल छल

एहि बड़क विशालतामे
समावेशित अछि
एहि गामक एकता
एतुका सभ्यता-संस्कृति
एतुका लोक रीत-नीति
भाइचारा एकता-मानवता
जे बन्हने अछि लोककेँ
एक सूत्रमे
बिना बंधनकेँ
अचानकसँ एकदिन
उठल तेहन जोरगर आन्ही
जे बड़क गाछकेँ
जड़िसँ उखारि फेकलक
धराशायी कऽ देलक
देखितहि-देखितहि
सुखा गेल बड़क
सभ हरियर डारि
वटसावित्री कथाक
ओहि बड़क जड़िसँ
भऽ गेल अन्त

गामक लोक
हाहि कटैत रहल
धरि बड़क गाछ
नहि उठल
फेर कहियो
अपन छत्रछायामे
लोककेँ समेटैक लेल
स्नेह-प्रेम दैक लेल

तेहने सन हाहि
काटि रहल अछि
आइ फेर हमर मोन
आइ फेरसँ उठल
तेहने सन आन्ही
जे मानवताक विशाल
बड़क गाछकेँ
एके जोरमे
कऽ देलकैए धराशायी
आइ फेरसँ लोक
भऽ गेल अछि
छायाहीन-आश्रयहीन
मनुख-मनुखक दुश्मन
मात्र सुनने रही
आइ आँखिसँ देखियो रहल छी

मन बिक्षुब्ध अछि
दुःखी अछि ओहिना
जहिना श्मशानसँ
घुरलाक बाद होइत अछि
अपन स्वजनकेँ
जरेलाक बाद होइत अछि
सम्पूर्ण अस्तित्वपर
पसरि गेल अछि
वएह मोह-विछोहक चादरि

सोचैत छी
कतेक कमजोर छल
हमर स्नेह-सम्बन्धक जड़ि
जे एको आन्ही

नहि सहि सकल
कनियो हवाक रुखि
नहि मोड़ि सकल
खढ़-पात जकाँ
एके झोंकमे
उड़ि गेल
सभ सम्बन्ध
देखितहिँ-देखितहिँ
तोड़ि गेल...।

बलचनमा

ककरो खेतमे
मरुआ-धान रोपैबला
ककरो नेनाक
नेकरपन करैबला
बलचनमा आब
दलित-परित्रासित
नहि रहल
ओ भऽ गेल अछि
एहि परोपट्टाक
नामी ऑफिसर
जकरा देखितहि
बड़का-बड़का लोक
झुकबैत अछि
श्रद्धासँ माथ
''प्रणाम सर''

मंद-मंद मुस्काइत
बढ़ि जाइत अछि
बलचनमा आगू
आब ककरो दिन छैक
जे बलचनमाक माइ-बहिन दिस
देखत आँखि उठाकेँ
जँ भूलोसँ
ई भूल
करत कियो
तऽ जहलक कोठरी

सुरक्षिते बुझू तकरा लेल

बलचनमाक चारसँ
नहि चुबैत छै आब
साओन-भादवमे पानि
ओ बना लेलक अछि
अपना लेल
पक्का मकान
बलचनमाक भनसाघरसँ
जखन उठै छैक
माछ-माउसक सुगंधि
अड़ोसी-पड़ोसीक जीहसँ
खसि पड़ैत पानि छैक

बलचनमाक घरवाली
जखन करैत छैक
बलचनमासँ
अंग्रेजीमे बात
तऽ लाल-काकी
आ बड़की काकीकेँ
लागि जाइत छनि छबगियान
मर बँहि ई की
गिटिर-पिटिर करैत छै...!

समय जे नहि कटायल

कका! समाधिस्थ सन
बुझाइत छथि आब
किछु नहि बजैत छथि
चुपचाप पड़ल-पड़ल
गुण-धुन, गुण-धुन करैत छथि

जखन कखनो
पुछैत छियनि हाल
कका! कोना छी
बड़ झूस मोने
कहैत छथि
''है कोना रहब
बुझू जे जीबैत छी एतबे''

जहियासँ ककाकेँ
डायबिटीज भेलनि
जीवने जेना
बेरंग भऽ गेलनि
भोरे हाक दैत छलखिन काकीकेँ
'हयै' फल्लाँक माय
कने आद दऽ कऽ
मिठगर कऽ चाय बनाबू
चाय बिना की
दिनक शुरुआत होइत छैक

मिठगर चाय

ककाकेँ बड़ पसंद
आब चाय
बिना चीनीकेँ चलैत छनि
चाय हुनका पीबैत छनि
आकि चायकेँ ओ
कहब कठिन अछि

थारी भरि
गरमागरम भात
आ ताहिपर
आलूक दम
आलूक चोखा
आलूक चिप्स
स्वादि-स्वादि
खाइत छलाह
आलूमे तऽ
प्राण बसैत छल हुनकर
आब बिना आलूक सब्जी
जलपानो रोटिये
आ भोजनो रोटिये
खाय पड़ैत छनि सभ दिन
हकन्न कनैत छनि मोन
''हैय! बिना भातक
कतौ भोजन होय
तहन तऽ कहू जे
दिन कटैत छी कहुना''

भोजनोपरांत कटोरा भरि दही
ताहिपर अहगरकेँ चीनी
जामे नहि पड़ैत छलनि थारीमे

तामे उठैत कहाँ छलाह
पीढ़ी परसँ
सात चोरिकेँ
दही-चीनी
जोगबैत छलखिन काकी
ककाक लेल

कोनो ने कोनो बहाने
ओ अनैत छलाह मधुर
आ सभसँ बेसी
हुनके आगू जाइत छल
कारण सभकेँ पता छलै
मधुर ककाकेँ
बड़ प्रिये
दैवक गति
के जानय
डॉक्टर धरि
कहि देलकनि
''जँ जीबय चाहैत छी
तऽ एहि सभ चीजकेँ
परित्याग करू''
ककाकेँ जीवनोसँ
कोनो कम प्रेम नहि छनि
ओ जीबय चाहैत छथि
हर हालमे
तेँ मन मारिकेँ
रहि जाइत छथि

मधुरक दोकान लगसँ
जखन-कखनो

आवाजाही होइत छनि हुनकर
मिठाइकेँ देखैत छथि
शीशामे बंद
एक-एक मधुरकेँ
जेना आँखियेसँ
खाइक प्रयास
करैत होइथि ओ

कएक दिन तऽ
ओ कहैत छथि
बड़ हुलाससँ
''हैय सपनामे
देखलियै आइ
कि गरमागरम
लालमोहन आ रसगुल्ला
खेलहुँ भरि इच्छे
पुछह नहि
कतेक नीक लागल

एगो बात कहह
जँ सपनामे
मधुर कियो खाय
तऽ ओहिसँ
डायबिटीज नहि न बढ़तै?''
हँसियो लगैत अछि
आ दुःखो होइत अछि
ककाक बात सुनि
समय जे नहि कराबय!

गंगा

पहिल बेर सुनने रही
विस्तारसँ
भागिरथी प्रयासक मादे
मधुश्रावणीक कथामे
जहिया नव-नव बियाह
भेलै रहय
आ पुजने रही
शिव-पार्वती संग
नागराज वासुकियोकेँ
पनपथिया भरि
फूल लोढ़ि
आ कटोरा भरि
दूध-लावा लऽ कऽ

निरक्षर रहितहुँ
कथा वाचिका
सुनेने रहथि विस्तारसँ
भागिरथक तप-त्यागक कथा
की असगर भागिरथ
प्रेतसँ सहसहाइत
अपन डीह-डाबरकेँ
मुक्त करबाक लेल
अपन पूर्वजकेँ
मुक्ति दियेबाक लेल
कोन तरहें प्रयास केलाह
मुक्तिदायिनी गंगाकेँ

धरती धरि अनलाह

जाहि गंगाक स्पर्श होइतहि
मुक्त भऽ गेल
प्रेत-योनिमे भटकैत
भगिरथक सभ पूर्वज
आ धरती भऽ गेलीह स्वच्छ
कुमुदनीक फूल सन सुन्दर
ताहि दिनसँ
भगिरथ भऽ गेलाह
इतिहास प्रसिद्ध पुरुष
जिनकर चर्चा
करैत अछि लोक
जिनक नाम लऽ
उदाहरण दैत अछि लोक
''भागिरथी प्रयास''

सरिपहुँ भगिरथ
महान छलाह
महान छल हुनक कृत्य
जे गंगा धरती धरि एलीह
धरतीक सभ मैल साफ केलीह

आइ गंगा
स्वयं मैल छथि
मैल अछि
गंगाक परिसर
योजना-परियोजना तऽ
पुरबा-पछबा बसात सन
एम्हरसँ अबैत अछि

ओम्हर जाइत अछि

गंगा दलदलमे फँसल
विवश छथि
थाल-माटि खेबाक लेल
मैल भऽ जीबाक लेल
गंगाक पवित्र धार
''नव उज्ज्वल जल धार
हार हीरक सि सोहति''
केमिकल युक्त
विषाक्त बनि गेल अछि
''बीच-बीच छहरति बुन्द
मध्य मुक्तामणि पोहति''
कबाड़ीक साजो सामानसँ
विद्रुपित भऽ गेल अछि
जकरा देखि-देखि गंगा
आइ स्वयं लज्जित छथि

गंगा अस्वीकार कऽ रहल छथि
ओहि सभ अस्थि-कलशकेँ
जे गंगाक धारमे
विसर्जित कएल जाइत अछि
मुक्ति लेल
ओ तऽ स्वयं
मुक्ति चाहैत छथि
एहि धरती
एतुका लोकसँ

आइ गंगा
प्रतीक्षा करैत छथि

भगिरथे सन
कोनो दृढ़ निश्चयी
प्रज्ञावान पुरुषक
जे अपन हठ
अपन तप-त्यागसँ
मैल भेल गंगाकेँ
साफ करत
एतुका लोकक दुष्प्रवृत्तिसँ हुनका मुक्त राखत!

निर्णय

मालिक हम बेर-बेर
छटलियै-कुटलियै
आ पिसलियै गहुँम
मुदा तैयो
रोटी जोग आटा
नहि निकालि सकलियै
आब एकर निर्णय
अहींपर सरकार
हमर मेहनतिमे खोट छल
या अहाँक
गहुँमे मरहन्ना...!

पटरी तर

लाख प्रतीक्षा करौ
रमबतिया-रमकलिया
आ रमरेखियाक
आब नहि घुरतै घर
ओकर घरबला

ओ तऽ दफन भऽ गेलै
कुव्यवस्थाक पटरी तर
दिल्ली-बम्बइ
आ कलकत्तासँ
घर घुरैत काल...!

पितामह

हे! पितामह
अहाँ तऽ छलहुँ
सर्वगुण सम्पन्न
पुरुषार्थ युक्त पुरुष
फेर कथी लेल
चुप रहि गेलहुँ
सभ न्याय-अन्यायपर
पाथर सन कठोर
प्रभावहीन बनल

गलती तऽ भेल छलनि
महाराज शान्तनुसँ
जे एकटा स्त्रीक
रूप-लावण्यमे
आन्हर भऽ
बिसरि गेलाह
अपन सभ नीक-बेजाय
फेर दण्ड
अपना आपकेँ
अहाँ कियै देलहुँ
देवव्रतसँ भीष्म
कियै बनि गेलहुँ

कनियो नहि सोचलथि
महाराज शान्तनु
जे राजाक सभ सुख-दुख

ओकर प्रजासँ
जुड़ल रहैत छैक
आ कनियो नहि
सोचलहुँ अहाँ
जे पिताक
काम-लिप्साक परिणाम
अन्ततः भविष्यमे
प्रजाकेँ ही भोगऽ पड़तैक

हे! पितामह
कर्तव्यसँ पैघ
कोनो वचन
कोना भऽ सकैत अछि
आँखि रहितहुँ आन्हर
आ कान रहितहुँ बहीर
अहाँ कोना भऽ गेलियैक
जे अपना कुलवधुक
आर्त्तनाद तक नहि सुनाइ पड़ल

हे! पितामह
ओ पुरुषार्थ
कोन काजक
जे एकटा परित्रासित
स्त्रीक रक्षा
नहि कऽ सकल
ओकरा मान-सम्मान
नहि दऽ सकल

हे! पितामह
अहुँक धमनीमे तऽ छल

कुरुवंशेक रक्त
फेर कुरुवंशक
अधःपतन देखि-देखि
कियै नहि खौलल
कियै नहि उबलल

हे! पितामह
कतहु नहि कतहु
महाभारतक बीजारोपण
अहीक हाथेँ भेल
कतहु ने कतहुँ
विनाशक मूल कारण
अहीं बनलहुँ

अहीं बनलहुँ
सहस्त्रो-सहस्त्र
आम आदमीक
अकाल मृत्युक कारण
जकरा रक्तसँ
सुनैत छी
आइयो अछि लाल
कुरुक्षेत्रक मैदान!

घरहीन

ओ सभ दिन
अनैत अछि
अपना चोंचमे
भरि-भरि
एकहकटा खढ़
एकहकटा काठी
आ हमरा पंखाक
पाँखिपर
सहेजि-सहेजि
बनबय लगैत अछि
अपना लेल
एकटा घर

बेर-बेर खढ़-काठी
खसि पड़ैत छैक निच्चाँ
जकरा ओ बेर-बेर
उठा-उठा रखैत अछि ऊपर
ओकरा विश्वास छैक
एक ने एक दिन
अपन प्रयासमे
ओ होयत अवश्य सफल
आ बना लेत
हमरा घरमे
अपना लेल
एकटा घर

जाहिमे सुरक्षित
पलतै ओकर नेना
सर्दी-गर्मी
पानि-पाथरसँ निश्चिन्त
बीततैक ओकर जीवन

ओकरा आभास नहि छैक
जाहि घरमे
ओ बनबय चाहैत अछि
अपना लेल घर
ताहि घरक नींव
कतेक कमजोर छैक
कतेक असुरक्षित छैक
ओहि घरक भविष्य

स्वयं पता नहि छैक
ओहि घरक बासिंदाकेँ
जे कहिया आ कोन विधि
छोड़य पड़तैक
ओकरा अपन घर
आ ओ भऽ जायत
स्वयं घरहीन
शीतमे, रौदमे छीजैत
अपना लेल
एकटा आश्रय तकैत!

पहिचान

तेरह सालक
स्कूली जीवनक
आइ अंतिम दिन
छलनि बाबूक
प्रसन्न तऽ एना छथि
जेना सम्पूर्ण अकाश
भेटि गेल होनि हुनका

मुदा बूझल नहि छनि
आगुक सफर
आरो दुरुह
होइवला छनि
बनबय पड़तनि
अपना लेल
भीड़क बीच
अलग पहिचान
निकालय
पड़तनि
दशरथ माँझी जकाँ
पहाड़क छाती चीरिकेँ
अपना लेल रास्ता
उठबय पड़तनि
अपना कान्हपर
वृद्ध माय-बापक भार

करय पड़तनि जोगाड़

अपन परिवार लेल
माथ भरि छाहरि
आ पेट भरि अन्नक

निभाबय पड़तनि
सभटा लोक रीति-नीति
जे लोककेँ बन्हने अछि
जाहिसँ लोक बान्हल अछि

पूरा करय पड़तनि
ओ सभ वचन
जे एहि देशक
एकटा आम नागरिकक
कर्तव्यसँ जुड़ल अछि!

सरकार

हमरा संवेदना नहि
सुरक्षा चाही सरकार

हमरा चाही
साँस लेबाक जोग
स्वच्छ हवा
पाँखि पसारबाक लेल
पैघ आकाश
भूख मेटेबाक लेल रोटी
तन झाँपय लेल वस्त्र
माथ भरि छाहरि

हमरा संवेदना नहि
सुरक्षा चाही सरकार

हमरा चाही
सुखद वर्तमान
निश्चिंत भविष्य
आँखिमे सुन्दर सपना
ओसायल दूभिपर चमकैत
सूर्यक किरण सन
देदीप्यमान जीवन

हमरा संवेदना नहि
सुरक्षा चाही सरकार

हमरा चाही
अपना घरमे
अपनहि लोक
अपना देशमे
अपनहि हीत-मीत
अपना हाट-बाजारमे
अपनहि अड़ोसी-पड़ोसी
अपना हृदयमे धड़कैत
अपनहि दिल

छुच्छे सम्वेदना लऽ कऽ
की हम चुड़ि-चुड़ि फाँकब
की अपने खायब
की धिया-पुताकेँ खुआयब
सभ घटना-दुर्घटनाक बाद
छुच्छे सम्वेदना
कने कालक मौन व्रत
दू बुन्न नोर
फेर सीना तानिकऽ
धनुष-भंगक प्रतिज्ञा

हम उबि गेल छी सरकार
हम थाकि गेल छी सरकार
हम हारि गेल छी सरकार
अहाँक सम्वेदनाक
बोझा उठबैत-उठबैत
हमरा नहि चाही आब
अहाँक कोनो संवेदना

जँ देबाके अछि

तऽ एकटा दृढ़ इच्छाशक्ति
आ स्वार्थहीन जीवनक
संकल्प दिअ
कि जाधरि
ठठरीमे रहत प्राण अहाँक
कोनो रीति-नीतिकेँ
कोनो स्वार्थकेँ
हावी नहि होमय देब
अपना आ हमरा बीच

जनता आ जनार्दनक बीच
रहय सदैव
पारदर्शी सम्बन्ध
जे एक-दोसराक
सहारा बनय
एक-दोसराक
भार उठबय
मन-कर्म आ वचनसँ
अहाँ हमर होइ
हम अहाँक होइ!

बड़की काकी-1

आइ भकोभन्न लगैए
सम्पूर्ण घर-आँगन
एकटा बड़की काकीक अभावमे
जहिया बड़की काकी छलीह
गहबर सन चमकैत छल
घर-अँगना
बरतन-बासन चक-चक
कपड़ा-लत्ता उज्जर दप-दप
बाड़ी-झाड़ी साफ-सुथरा

सोलहो कलाक मलिकाइन
बड़की काकी
जखन कहैत छलखिन
हमरा विरुद्ध
जँ चहु कियो अलगायत
तऽ तकर चहु हम खींचि लेबै
दिन छलै ककरो
जे बड़की काकीक डरे
किछु बजितय
अरोछ-परोछमे भलेहि
कियो किछु बाजय
मुँहपर हाँमे हाँ
मिलबैत छल सभ

बड़की दियादनी
कहैत छथिन हमर

कनियाँ जहिया लोक छल
तऽ घर नहि छल
आब घर भेल तऽ
लोक नहि अछि
सत्ते से हकन्न कनैत अछि
डीह-डाबर
बड़की दीदी अपने दिल्ली
आ गामक घरमे
ताला लटकल
मझिली काकीक जिम्मे
दऽ गेलखिन भगवतीकेँ दीदी
आब हुनके भारे भरतबे
ओंगठल छथि
कुलदेवी काली
जामे बड़की काकी जीली
डाली भरि-भरि
फूल तोड़ली
सिनेह-भावसँ
भगवती पुजली

कएक बेर हम
तऽ टोकियो दैत छलियनि
''यै बड़की काकी
एतेक फूल कियै तोड़ैत छथि
किछु डारियोमे
किएक नहि रहए दैत छथिन
ओ कहैत छलीह
कनियाँ फूलक जीवनक
सार्थकता छी
देव-पितरपर चढ़नाय

जँ नहियो तोड़ब फूल
तऽ मौलाकेँ ओ
झड़िये ने जायत

आइ फूल
फुलाइत अछि
मौलाइत अछि
आ झड़ैत अछि
कियो तोड़निहार नहि
कियो पुछनिहार नहि

पुछनिहार तऽ आब
बड़को ककाकेँ
कियो नहि रहलनि
शहर भावैत नहि छनि
आ गाममे असगर
रहल नहि होइत छनि
पंचतत्वमे विलीन
आमक गाछीमे
पड़ल छथिन बड़की काकी
आब तुकपर
के एक पेट भोजनो देतनि

जखन कखनो
औनाइत छनि मोन
बड़का काकाकेँ
कानि अबैत छथि
बड़की काकीक सारा लग बैसि
आ गमछासँ
आँखि पोछैत

घुरि अबैत छथि घर
एकरा छोड़ि
कोन अवलंब दोसर
जे जाइत अछि
से घुरैत नहि अछि
जे अछि एतय
से अपना इच्छे
जा नहि सकैत अछि ओतय...!

बड़की काकी-2

यै गंगा महरानी
सुनैत छियैक
अहाँक बाबू एला
घर खोलू
बड़ हलचलाइत
अहल भोरे
कहैत छलीह
बड़की काकी
आ हम आँचर सरियबैत
उठैत छलहुँ धड़फड़ायले

केबाड़क पट्टाक आरसँ
जहन नजरि दौड़बैत छलहुँ बाहर
कतहु कियो
नहि देखाइत छल हमरा
तखनहि देखैत छलहुँ
भभाकेँ हँसैत
बड़की काकीकेँ
बुझएमे भांगठ
नहि रहि जाइत छल हमरा
की बड़की काकी
ठकलनि अछि फेर
बिन दाँतोक मुँह
कोनो बेजाय नहि लगैत छल हुनकर

दोसरो दिन, तेसरो दिन सैह बात

धरि हम उठैत नहि छलहुँ
बिछाओन छोड़ि
पड़ले-पड़ल कहैत छलहुँ
''अयं आइ हम बड़ उठैत छियनि
जतेक ठकती से ठकथु
कियो नहि एलथि बाहर

मुदा उत्सुकतावश तैयो
खिड़कीसँ अवश्य
देखि लैत छलहुँ बाहर
शायद बाबू आयल होथि
सासुरमे नवकनियाँ
अपन पिताक प्रतीक्षा
बड़ आतुरतासँ करैत अछि
हमहुँ करैत रही

बड़की काकीक भोर
एहि तरहेँ
होइत छल सभ दिन
एक दिन नहि रहल गेल
हम पुछिये देलियनि
यै बड़की काकी
भोरे-भोर एना हमरा
कियै ठकैत छथि''
ओ बड़ सहजतासँ कहली
यै कनियाँ ठकब नहि अहाँकेँ
तऽ हँसब कोना''

आ ई ठकब एकदिन
सरिपहुँ सत भऽ गेल

भाइ साहब पहुँचला भोरे-भोर
पटनासँ गाम
हमर सासुर
धरि बड़की काकी
कतबो कहली
हम घर नहि खोललहुँ
घर तऽ खोललहुँ तखन
जहन भाइ साहब
केबाड़क पाट पीटैत कहला
''कामिनी घर खोल
हम छी बौआ''

लाजे हम मरि गेलहुँ
अपने रहथि घरे
द्विरागमन भेना
कोनो बेसी दिन
नहि भेल रहय

से हँसी-चौल करय वाली
प्राणप्रिय बड़की काकी
आइ निष्प्राण भेल
पड़ल छथि तुलसी चौरा लग
कतबो हिलबैत-डोलबैत छियनि
कतबो आवाज दैत छियनि
आँखि नहि खेलैत छथि
मुँह नहि बजैत छथि
नहि कहैत छथि
''गंगा महारानी सबेरे नहाउ
अबेर भेल''
नहि पोछैत छथि

अपना आँचरसँ
हमरा आँखिक नोर

आब के ओल बनाओत
के अरिकंच
के अदौरी, के कुम्हरौरी
के तिलकोरक तरुआ तरि
राखत आगू
आ पूछत सिनेहसँ
''कनियाँ चीखि कऽ देखियो तऽ
केहन बनलैए''

गाड़ीपरसँ परीछकेँ
लऽ गेली घर
एकटा नाम आ पहिचान दऽ हमरा
अपने उड़ि गेलीह
कतऽ कोन दुनियाँमे
पता नहि अछि हमरा
घर-अँगना
बाड़ी-झाड़ी
सभ भयाओन लगैत अछि
होइत अछि
कोनो कोनसँ
निकलती ओ
आ अपन खोइँछ खोलैत
बैसि जेती हमरा लगमे
जाहिमे भरल रहत
पाकल-डम्हायल लताम
बड़ ममत्वसँ
हमरा देखैत

कहती ओ
''कनियाँ लताम खाकऽ देखियौ कने
मीठ छै कि खट्टा''

से सिनेह दए वाली
हमर बड़की सासु
हमरा सभक बड़की काकी
पाथर बनल पसिझैत नहि छथि
गंगा महरानी
दुःखक समुद्रमे
बहि रहल छथि
बहथु जतेक बहतीह
बड़की काकी लेखे धनि सन!

ताण्डव

खण्ड-खण्डमे
विभक्त होइत देश
खण्ड-खण्डमे
विभक्त होइत समाज
खण्ड-खण्डमे
विभक्त होइत मनुख
नहि जानि
आर कतेक खण्डमे
विभक्त हैत
ई सृष्टि
ई संस्कृति

लगैत अछि
मनुखक हृदये
जेना बँटि गेल अछि
बहुत रास खण्डमे
जे भस्म भेल
सतीक देह (अंग) जकाँ
कतए-कतए खसत
कतए-कतए अर्रा लागत
स्वयं मनुखो नहि जनैत अछि

तामसे पित्त भेल
शिव सन ताण्डव
करैत मनुखक मोन
सभ किछु लील लेबापर

आतुर अछि
मनुखसँ मानवता
छीनि लेबापर
आतुर अछि

एक टाँगपर
प्रार्थनारत भेल
चर-अचर
स्वयं प्रकृति
अबै बला प्रलयसँ
भयभीत भेल
एहि भाभटकेँ
समेटबाक लेल
गोहारि रहल अछि
एहि विभाजनक दंशसँ छटपटा रहल अछि

ओ थाकि गेल अछि
मनुखक इच्छा-आकांक्षा
ओकर स्वार्थी प्रवृत्तिक समक्ष
एक फूलक
खण्ड-खण्डमे
विभक्त पत्ती
आइ अपनासँ
अपना हेबाक हिसाब मँगैत अछि
डारिसँ
अपन सम्बन्धक
मोल अँकैत अछि!

ओवरब्रिज

ओवरब्रिजक निच्चाँमे छैक
एहि दुनियाँसँ भिन्न
एकटा आरो दुनियाँ
जकर जीवन शुरू होइत छैक
ओवरब्रिजक निच्चाँसँ
आ समाप्तो ओवरेब्रिजक निच्चाँमे

ओहि चारि डेगमे
सिमटल छैक
ओकर घर-परिवार
हीत-मीत
सुख-सेहन्ता
सर्दी-गर्मी
पानि-पाथर
प्राकृतिक कोनोटा आपदा

ओकरो धमनीमे बहैत छैक
वैह लाल रक्त
जे हमरा धमनीमे बहैत अछि
ओहो लैत अछि साँस
वैह हवा
जे हम लैत छी
ओकरो भूख-प्यास
लगैत छैक ओहिना
जहिना हमरा लगैत अछि
ओकरो ममता छैक

अपन बाल-बच्चापर ओहिना
जहिना हमरा अछि
अपन बाल-बच्चापर

मुदा ओकरा लग
हमर सुख-सुविधाक
सए साधनमेसँ एको नहि छैक उपलब्ध
जकर बेगरता
होइत छैक जीबाक लेल
एकटा आम आदमीकेँ

ओ एकटा विशाल
प्रजातांत्रिक देशमे
जीबि रहल अछि जीवन
उपेक्षित-परित्रासित
बन्धुआ मजदूर सन
जकर सभ इच्छा-आकांक्षा
निर्भर करैत छैक
मालिकक मर्जीपर!

बगेरी

बगेरी है, बगेरी करैत
जोर-जोरसँ हाक दैत
अबैत अछि
बगेरीवला
ओकरा हाथमे
रहैत अछि
बेस नम्हर
लोहाक पिंजरा
जाहिमे बंद
रहैत अछि बगेरी

करजनी सन
आँखि वाली बगेरी
सुकोमल पाँखि वाली बगेरी
सुन्दर चोंचवाली बगेरी
डरसँ कँपैत
चारूभर चौकन्ना होइत बगेरी
अपन घर-अँगना
अपन बाल-बच्चा लेल
तड़पैत, आफन तोड़ैत बगेरी
पिंजरा तोरिकेँ
बाहर होइक लेल
पाँखि फड़फड़बैत बगेरी
निर्दयी शिकारीकेँ
कहियो नहि पेट भरैक
शाप दैत बगेरी

बगेरीकेँ पता छैक
छैक पूर्व आहटि
कि कनिये कालक बाद
ई शिकारी ओकरा बेचि देतैक
कि कनिये कालक बाद
कियो ओकरा खरीद लेतैक
पहिने मूड़ी मचोड़तैक
फेर पाँखि नोचतैक
तकर बाद
बुट्टी-बुट्टीमे बाँटी
ओकरा खा जेतै

बगेरी हाक्रोश कऽ
कनैत अछि
आस भरल आँखिसँ
हमरो दिस तकैत अछि
हम सभ किछु जनैत
सभ किछुसँ अनजान बनल
ठाढ़े रहि जाइत छी
आ बगेरीबला
बगेरी है बगेरी करैत
जोर-जोरसँ हाक दैत
बढ़ि जाइत अछि आगू
फेर कोनो घर
देखबाक लेल
बगेरी बेचबाक लेल!

शीर्षकहीन

एक दिस बजैत अछि
स्कूलक घंटी
दोसर दिस देखैत छी
अर्धनग्न नेनाकेँ
कान्हपर बोरा टँगने
गलिये-कुचिये घुमैत
कचड़ा बीछैत
तऽ मन बेचैन भऽ उठैत अछि
हे! भगवान ई की देखबैत छी
जकरा पीठपर रहबाक चाही
स्कूलक बैग
हाथमे कॉपी-किताब
से शिक्षा-दीक्षासँ दूर
पेट भरि अन्नक जोगाड़मे
गलिये-कुचिये घुमैत अछि
कचड़ा बीछैत अछि

आजादीक अमृतमहोत्सवक बादहुँ
जँ देशक सभ नेनाकेँ
हम स्कूल धरि
नहि पहुँचा सकलहुँ
तऽ हमरा लेल
घोर चिंताक बात
अवश्य छी सरकार

धरि जाहि तरहेँ

बढ़ि रहल अछि
रेलवे लाइनक बगल
झुग्गी-झोपड़ी
आ जनमि रहल अछि नेना
नेबो-लताम सन
ओकर समुचित
व्यवस्थाक भार
आसानो तऽ नहि अछि

झूठे हम कही
जे सभटा भार-कुभार
अहींक कपार
तऽ इहो अहाँक संग
न्याय नहि होयत सरकार
जखन कि
हमर आत्मा गवाही दैत अछि
कतहु ने कतहु
एहि अन्यायक
एहि कुव्यवस्थाक भागीदार
हमहुँ छी सरकार!

गाम-1

गाम बदलि रहलैए
बदलि रहलैए
ओतुका परिवेश
आब ओतहु
टुन-टुन करैत अछि
मोबाइलक घंटी
गप्प-सप्प करैत अछि
घरे बैसल
दिल्ली, बम्बइ कलकत्ताक
लोकसँ लोक

गाम बदलि रहलैए
बदलि रहलैए
आब ओतुका सोच-व्यवहार
एके घरमे
आब दूटा चूल्हा जरैत अछि
सासु-पुतोहु
आब भिन्ने भानस
करैत अछि
आब नहि रहलैक
बड़की काकी
आ छोटकीक बीच
पहिलेबला बात
कि बड़की काकीक
माथ दुःखाइत छलनि
तऽ छोटकी काकी

हिमताजक तेल लऽ
दौड़ैत छलीह
कि छोटकी काकीक नेना
एक बाटी भात लेल
कनैत छल
तऽ बड़की-काकी
थारी भरि भात लऽ
परबोधैत छलीह
मकर संक्रांतिमे लोक
टोल भरि बँटैत छल
तील-चाउर-गुड़
फगुआमे लोक
चंगेरी भरि-भरि
पुआ-पूरी टोल भरि
बिलहैत छल
आब ककरा घरमे
की बनैत अछि
कियो नहि जनैत अछि
ककर नेना
कथी लेल कनैत अछि
कियो नहि बुझैत अछि
बड़की काकीक
आब माथ दुखाओन
आ कि पीठ
नहि छै ककरो कोनो सरोकार

गाम बदलि रहलैए
बदलि रहलैए
ओतुका रहन-सहन
पहिने एकटा संयुक्त

नम्हर-चौरगर
अँगना होइत छल
जतय लोक
समा बान्हि
खेलाइत छल
जट-जटिन
सामा-चकेबा
आ झड़काबैत छल
चुगलखोर चुगलाक मुँह

आब नहि बाँचल
ओ संयुक्त अँगना
नहि ओहन
सोच-विचारबला लोक
आब ऊँच-ऊँच छहरदेबालीसँ
घेरायल अछि अँगना
बँटायल अछि अपना-परायामे लोक
चुगला पंच बनल
करैत अछि पंचैती
वृन्दावनमे
लागल अछि आगि
सेपरेट व्यवस्था
तेना ने डँसलक लोककेँ
कि लोकसँ लोक
अलग भऽ गेल

गाम बदलि रहलैए
बदलि रहलैए
ओतुका रूप-रेखा
जेठक गर्मीमे

आब लोक
बड़-पीपरक छाहरि
नहि तकैए
साओन-भादवमे
आब लोकक
घर नहि चुबैत अछि

आब ओतहु
पक्का मकान अछि
सड़क अछि
बिजली अछि
टी.वी.-पंखा अछि
कहाँ छैक पलखति लोककेँ
कि एक-दोसराक
घर जायत
सुख-दुःखमे
शामिल होयत
आब संवेदना गाममे
शहरे जकाँ
समाप्त भऽ रहलैए
लोकक हृदयसँ
बेलग भऽ रहलैए!

गाम-2

गाममे बाजि रहल अछि
पलायन संगीत
जकरा सुनबाक लेल
विवश अछि
अवाल-वृद्ध

पुरखाक डीह-डाबर
अयोध्याक राजसिंहासन जकाँ
वचनबद्ध अछि
एकाकी जीवन
जीबाक लेल
राम-राम रटैत
छूटि रहल अछि
अनेको दशरथक प्राण

बाड़ी-झाड़ीमे
भट्टा-मुरैक जगहपर
जनमि गेल अछि
अनेरुआ घास-पात
खेत-पथार
बंजर-वीरान भेल
कनैत अछि
अगहनियोमे सभ बेर
साँझ पड़ितहि
कानय लगैत अछि
कोनटे-फरिके गीदड़

बहुतोक घरमे
नहि पड़ैत अछि साँझ
बहुतोक घरमे
नहि जरैत अछि चुल्हा
बहुतोक भगवती
रहि जाइत छथि उपासले
बहुतोक होली-दिवाली
बीति जाइत अछि
रंगहीन-उमंगहीन

गामक युवाशक्ति
कऽ लेलक अछि मुँह
शहर दिस
उठा लेलक अछि डेग
दिल्ली, बम्बइ, कलकत्ताक लेल

चारूभर गाममे
पसरल छैक बेरोजगारी
कखनो दाही
तऽ कखनो रौदी
प्राकृतिक आपदा
जानलेवा बिमारी
तोड़ि रहल छैक डाँड़
रोटी-दवाइसँ लऽ कऽ
हींगसँ हरदि धरिक
व्यवस्था करैत-करैत
भऽ रहल छैक
लोकक धैर्य बेसम्हार

शहरमे सपना छैक
सुन्दर भविष्यक
कल्पना छैक
दू मुट्ठी अन्न छैक
दवाइ-दारूक व्यवस्था छैक
हवे मिठाइ सन सही
आकर्षण तऽ
छैक शहरमे अवश्य

कतेक विरौलबाली
बरेलीक झुमका लेल
आस लगौने अछि
कतेक बिसनपुरबाली
बनारसी साड़ी लेल
फोन कएने अछि

मुदा बड़की काकी
बड़का बाबाक
आँखि टिकल अछि
गामक सिमानपर
जाहि दने हुनकर बाबू-बौआ
गामसँ शहर गेल रहैक
हुनका छत्र-छायासँ
बाहर निकलल रहैक...!

गाम-3

सभ दिन देखैत छी
समाचारमे
सभ दिन पढ़ैत छी
अखबारमे
बिहारमे बाढ़ि
बाढ़िमे डूबल बिहार

भरि छाती पानिमे
उबडुबाइत लोक
प्रसव वेदनासँ
छटपटाइत स्त्री
चिंतामग्न पुरुष
बेलल्ला भेल नेना
असहाय-असुरक्षित वृद्ध
पानिक संग-संग
दहाइत-भसिआइत माल-जाल

एहिनामे बेर-बेर
मोन छटपटाइत-कछमछाइत अछि
अपना लोक लेल
अपना गाम लेल
ओ गामक मुँहथरिपर
बेचना कियोटक घर
आ गामक बीचमे
लालजी सोनारक दोकान
आ गामक सिमानपर

रामजी चमारक दलान
ओहिना हैत एखनो
अपन अस्तित्व बचेने
या डुबि गेल हैत चप्प दऽ
पानिक भीतर
कोशी-कमलाक पेटमे
गामक बाहर

महादेवक मंठ लग
झाँझनक टाटबला
(आब इंदिरा आवासबला)
कसरौरबाली
बाल-विधवा मैंयाक घर
हुनकर अँगना
ओहि अँगनाक तुलसी चौड़ा लग
जरैत एकटा
नान्हिटा दीप
बचेने हैत एखन धरि
अपन अस्तित्व
आकि भासि गेल हैत
दूर कतहु
पानिक वेग संग

महादेव बचेने हेताह
अपना संग
कसरौरोबालीक
इज्जत-आबरू
जे नित उठि
स्नान कऽ
पूजा करैत छलनि

जल-अक्षत चढ़ा
नचारियो सुनबैत छलनि
सुख-दुःख कहैत छलनि
या विलीन भऽ गेल हेतनि
हुनक अस्तित्व
बाढ़िक वेगमे

समुद्रक बीच
बसल कोनो टापू सन
एखन हमर गाम
कतेक असहाय
कतेक असुरक्षित हैत
कतेक विवश
कतेक दुःखी हैत
ओतुका लोक
भूखल पेट
खाली हाथ
राहत पैकेटक
तकैत बाट
किलो भरि चूड़ा
पाव भरि गुड़
एक पैकेट मोमबत्ती
एक पैकेट दियासलाइ
एहियो लेल मारामारी
एक-दोसरासँ छीना-झपटी
ओह! केहन दयनीय
स्थितिमे पड़ल हैत
ओ गाम
ओतुका लोक

ओ गाम

जकरा अँगनामे
हम चलनाइ सिखलहुँ
ओ गाम
जकरा कोरामे
हम खेलनाइ सिखलहुँ
ओ गाम
जे हमर सभ सख-सेहंता
पूर केलक
ओ गाम
जकर स्नेह, सहयोगक
साक्षी अछि हमर रोइंयाँ-रोइंयाँ

ओ गाम आइ
बाढ़िक वेग संग
भसिया रहल अछि
जंगली जानवर संग
उबडुबा रहल अछि
अपन स्वप्नक लहास
अपनहि कान्हपर उठा रहल अछि

ओ गाम
जकर दुःख-दर्द
नहि अबैत छैक
कोनो समाचारमे
ओ गाम
जकर फोटो नहि छपैत छैक
कोनो अखबारमे
ओ गाम
जकर हाल
कियो नहि पुछैत छैक
कोनो सरकारमे...!

अलग रास्ता

अन्यायकेँ अन्याय कहब
जँ ई अपराध छी
तऽ हम करब
ई अपराध
बेर-बेर

पहाड़ जँ ठाढ़ होयत
सूर्यक रस्ता रोकि
तऽ चीड़िकऽ हम राखि देबैक
पहाड़क छाती

जँ सत्यक कण्ठ मोकताह
न्यायक कुर्सीपर
बैसल न्यायाधीश
तऽ मरोड़ि देबनि हमहुँ
हुनकर गरदनि

बनायब हम
अपना लेल
अलग रास्ता
जे भीड़केँ चीरैत
पहुँचत ओहि आम आदमी धरि
जे सत्यकेँ सत्य
आ झूठकेँ झूठ
कहबासँ डरैत अछि
बिन अपराधोक
दंड भोगैत अछि!

अभियुक्त

एक आदमी
आगि लगा रहल अछि
दोसर आदमी
ओकरा हवा दऽ रहल अछि
तेसर आदमी
ने आगि लगा रहल अछि
आ ने आगि मिझा रहल अछि
ओ दूर ठाढ़ भेल
मात्र तमाशा देखि रहल अछि

धरि समयक आँखिसँ
कहाँ छैक किछु ओझल
ओ जहिया कहियो
मूल्यांकन करबाक लेल बैसत
तऽ अभियुक्तमे
सभसँ ऊपर
देत नाम
ओहि तेसर आदमीक

जे ने आगि लगेलक
आ ने मिझेलक
दूर ठाढ़ भेल
मात्र तमाशा देखलक
जरैत घर
उजड़ैत जीवनक...।

जड़िविहीन शाखा

सामनेसँ जँ
मृत्यु अबितय
तऽ काका कहितथि
''चल हट जो
एखन बहुत काज
करबाक अछि हमरा''
मुदा मृत्यु तऽ
पाछूसँ आयल
चुपे-चाप
आ लील लेलक
काकाक सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ
पलक झपकिते

काका! एक बेर जे खसलाह
से फेर नहि उठलाह
एक बेर जे
आँखि मुनलाह
से फेर नहि खोललाह
विज्ञान, विकास
दैवक चमत्कार
किछु नहि काज देलक
जीवन आ मृत्युक बीच
जे रहस्य छल
से बनले रहि गेल

सोनपरी सन

सुन्दर काकी
जिनका लेल काका
पहिल बेर बनेने रहथि
पजेबाक घर
द्विरागमनसँ पहिने
आ उपहास करैत
बाबा कहने रहथिन
''एह हिनकर कनियाँ
बड़ दुलारू
पजेबेक घरमे
पैर रखथिन''
से सरिपहुँ काकी
काकाक बड दुलरी
जेहने बड़काक बेटी
तेहने सुनरी
ओ तऽ काकाक सौभाग्य
चाहे काकीक दुर्भाग्य
जे बियाहल गेलीह
एहि घरमे
हुनका नैहरक
पासंगो भरि
कहाँ छल हमर घर

काकाक पौरुषक प्रताप कही
चाहे काकीक लछमिनियाँ पैरक प्रभाव
एको वस्तुक कमी
कहाँ रहल घरमे
काकीक मुँह देखि-देखि
दियमानसँ फटथि काका
हमर घरबाली एहन

तऽ हमर घरबाली ओहन

से सोनपरी
आइ असहाय
अनाथ भेल
बैसल छथि कात लागल
आँखिसँ झड़ि रहल छनि
झर-झर नोर
बीच-बीचमे कुहरि उठैत छथि
''ठकहरवा छलाह ओ
ठकिकेँ चलि गेलाह''
अरिजन-परिजन सभ
व्याकुल-बेचैन अछि
सभक आँखि
भरल अछि नोर
मुदा काका
बुद्धत्वमे लीन
निर्विकार पड़ल छथि

लोक कहैत अछि
होश करू
सम्हारू अपना आपकेँ
मुखाग्निक बेर भऽ गेल
मुखाग्नि शब्द सुनितहि
फटैत अछि छाती

जाहि मुँहमे
पान भरल रहैत छलनि काकाकेँ
ताहि मुँहमे मुखाग्नि
हा! हन्त केहन दिन देखि रहल छी

की कहताह काका
मुदा काका
कहाँ किछु बजैत छथि
जरि उठैत अछि चिता
आगिक लपट
सभ किछु लील लेबापर
आतुर अछि

हवामे पसरि रहल अछि
चिराइन गन्ह
चिताक धुआँ
बेर-बेर आँखिमे पैसि-पैसि
आँखिकेँ आरो नोरा रहल अछि
हम हाक्रोस कऽ कनैत छी
''काका यौ काका''
लगैत अछि कानमे गुँजल
काकाक प्रेमसँ सिक्त शब्द
''बतहिया बेटी हमर''

माथपर बैसि गेल अछि
बहुत रास दुःख
आँखिमे नाचि रहल अछि
नील-टीनोपालबला धोती
आ लम्बा कुर्त्ता पहिरने
काकाक छवि

लोक कहैत अछि
आत्मा तऽ परमात्मामे
विलीन भऽ गेल
विलीन भऽ गेलाह फल्लाँ

पंचतत्वमे
आब की कनैत छी
कतहु किछु नहि अछि

सचमुच आब
कतहु किछु नहि अछि
छाउर भेल काका
पड़ल छथि
आमक गाछीमे
हमरा ने
आत्मा देखाइत अछि
ने परमात्मा

हमरा तऽ
जड़ि विहीन शाखा जकाँ
अपन सम्पूर्ण
परिवार देखाइत अछि
जे काकाक बिना
ने रहनाइ सिखलक अछि
ने जीनाइ...।

चक्रव्यूह

सेठजी नहि रहलाह
अचानकसँ रूकि गेलनि
हुनकर हृदयक गति
आ ओ विदा भऽ गेलाह
अनासुरतिये एकदिन
एहि दुनियाँसँ भिन्न
एकटा आरो दुनियाँक लेल

आब जे बाँचल अछि
ओ आलू-पियाजुसँ लऽ कऽ
नून, तेल, चाउर, दालि
हींग-हरदि सन
अनेको घरेलू सामान
जकर दाम सेठजी
अपना हिसाबे
तय करैत छलाह
आ बड़ गर्वसँ
कहैत छलाह
एकटा दोकान चलाकऽ
हम की नहि केलहुँ
तीन कट्ठा जमीन
पच-मंजिला मकान
बेटा-बेटीक बियाह-दान
पढ़ाइ-लिखाइ
ई की सहजहि भेल?

सचमे सहजहि तऽ
नहि भेल हेतनि
ई सभ
पाँचकेँ दस
आ दसकेँ बीस
हिसाब तऽ ओ
जरूरे बैसेने हेताह
प्रत्येक वस्तुक दामपर
जरूरे ऊँच-नीच
केने हेताह
अपना जीवनमे
आगू बढ़बाक लेल

मुदा जीवनक रेसमे
सभ दिन लोक
जितबे नहि करैत अछि
हारि सेहो जाइत अछि
कहियो कतहु
कोनो मोड़पर
ठेस खाकऽ

आब सेठजीक
जगहपर
मोहनलाल छथि
यानी सेठजीक उत्तराधिकारी
जिनका साहसे नहि होइत छनि
कि सेठजीक खाली कुर्सीपर बैसताह
सेठजी द्वारा बनाओल चक्रव्यूहकेँ
भेदन करताह

ओ तऽ कात लागल
बैसल रहैत छथि
हारल-थाकल सन
बेर-बेर गद्दीकेँ तकैत
दोकानक सामानकेँ गनैत
ई खाली कुर्सी
फूलक सेज नहि
काँटक ताज छनि
जिम्मेदारीक पहाड़ छनि
जकरा उठायब मोहन लाल लेल
कठिन अछि, बहुत कठिन अछि
ओहि ट्रैकपर चलब
जकरा सेठजी बैसेने छलाह
मेहनतिसँ सजेने छलाह।

आत्माक आवाज

दूर कतहुसँ
आबि रहल अछि
लाउडस्पीकरपर
अजानक आवाज
अल्लाह हो अकबर अल्हम्दुलिल्लाह
मन शांत भऽ जाइत अछि
मन पवित्र भऽ जाइत अछि
रोइंयाँ-रोइंयाँ
डुबि जाइत अछि
ओहि प्रार्थना
ओहि आत्माक
आवाजमे
ओहि घड़ी
एको रत्ती
नहि लगैत अछि
हम राम-नाम नहि
अजान सुनि रहल छी

एना कियैक
होइत अछि
गीताक श्लोक पढ़ैत
आ कुरानक कलमा सुनैत
मन एकाकार भऽ जाइत अछि
कियैक नहि
रहि जाइत अछि
मनमे कोनो द्वंद्व

एना कियैक
होइत अछि
मंदिर-मजारकेँ देखितहि
माथ झुकि
जाइत अछि
अपने आप

कियैक नहि
बचा पबैत छी हम
अपन अलग अस्तित्व
ओहि नदी जकाँ
जे विभिन्न दिशासँ
एलाक बादो
सागरसँ मिलिकऽ
सागरे सन भऽ जाइत अछि!

पाँच इंचीक देवाल

भाइ! ई पाँच इंचीक
देबालपर देबाल
जे अहाँ ठाढ़ केने जाइत छियैक
से कतेक मारुख अछि
मनुखक वास्ते
से एको बेर
नहि अहाँ सोचलियैक
कि एक दिन
ई पड़ि सकैत अछि
मनुखक जीवनपर भारी
जँ एको रत्ती
देह सोझ करतीह धरती
तऽ तहस-नहस भऽ जायत
अहाँक सृष्टि

मोन तऽ हेबे करत
कबीरक पाँति
''दो पाटन के बीच में
साबुत बचा न कोय''
भाइ विकासक होड़मे
जुनि करू
अपन नेओ कमजोर

मानलहुँ विकासो अछि
जरूरी मनुखक लेल
धरि जँ मनुखे नहि बाँचत
तऽ विकास ककर
आ कथी लेल!

धारा एक सए चौआलिस

प्रकृति तामसे पित्त भेल
बैसल अछि
कोप भवनमे
एक सत
दोसर सत
तेसर सत जे नहि करय
से नर्कमे खसय

मानिनीक मान
ओकर सम्मानसँ
च्यूत मानव
बेबस-लाचार
तर धरती
ऊपर बज्र नहि
चारूकात मात्र हाहाकार

असीमित भूख
अनन्त प्यास
अन्तहीन समस्या
समाधान! सुदामाक
दू मुट्ठी फरही
एहि काँखसँ
ओहि काँख
हेर-फेर होइत

एतय चमत्कारक

कोनो आस नहि
परिवर्तनक कोनो बाट नहि
एतय मात्र सरकार अछि
आ बात-बातपर
धारा एक सए चौआलिस
जे नहि सम्हरय अपनासँ
ओहिपर लगा दियौक
संविधानक कोनो धारा
आ सुति रहू निश्चिंत

रोटी लेल
बेटी लेल
कतेको युद्ध भेल
पानियो लेल युद्ध होयत
ई काल्हि धरि
कल्पने छल
मुदा सेहो आइ
सत भेल

बुन्द-बुन्द लेल
तरसैत धरती
तरसैत लोक
''दैवा! पानि रे अछैते
प्राण जाइ छै रे की''
कियो तऽ सुनय
ई आर्त्तनाद
कियो तऽ मेटबय
ई प्यास
मुदा नहि पसिझैत अछि
प्रकृतिक छाती

नहि बरिसैत अछि मेघ
हाथ-हाथ भरि
फाटल दरारि
ओहिमे डुबैत
मनुखक सभ वर्तमान-भविष्य

एहना स्थितिमे
कहीं एक दिन
हवो बहनाइ
नहि बंद कऽ दिय
तऽ कोनो असंभव बात नहि
जे प्रत्येक मनुखक हिसाबे
कनमा आ पौआमे
बँटाय लागय हवा
सेहो कोनो बड़ असंभव बात नहि

एहना स्थितिमे
परिस्थितिसँ घबड़ाकऽ
माय अपना कोखिकेँ
बंजर हेबाक शाप दऽ दैक
चाहे दफना दैक
अपन नेनाकेँ
कोखियेमे
सेहो कोनो असंभव बात नहि...!

यमुना

कतहु नहि छथि
यमुना आब
यमुना हेरा गेलीह कतय
ककरो नहि छैक पता
कहियो साक्षी बनल छलीह
राधा-कृष्णक प्रेमक
आइ तऽ साक्ष्यो मेटा गेलनि

नहि बाँचल आब
यमुनाक कोनो तट
कोनो वंशीवट
गोप-गोपीक मिलनक
तऽ प्रश्ने नहि रहल
एहि बेर ओ
कालिया नागक विषसँ
नहि बेधेली
एहि बेर ओ
अपने नगरवासी
अपने तटवासीक घातसँ
धराशायी भेलीह

आब हरियर कचोर पानिवाली
यमुनाक दर्शन दुर्लभ
आब गन्हाइत
कोढ़ि-कुष्ठ फूटल
नाला बहि रहल अछि

यमुनाक पेटमे
दर्दसँ कराहल हेतीह जरूर
लोककेँ पुकारने हेतीह जरूर
आ आर्त्तनाद करैत
विदा भऽ गेल हेतीह
एहि तट
एहि वंशीवटसँ

कियो नहि रोकनिहार
कियो नहि बौंसनिहार
सभ अपन-अपन
स्वार्थमे आन्हर
हे! कृष्ण, हे! माधव, हे! मुरलीधर
प्रकट होउ
रोकू मनुख आ
ओकर स्वार्थी प्रवृत्तिकेँ
यमुनाक जान
तखनहि बाँचत
अहुँक मान
तखनहि रहत।

शंखनाद

हे! सुनैत छियैक
सोलहो कलाक मालिक
द्वारिकाधीश कृष्ण
अहीं ने कहने रही
''यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत''
यानि जखन-जखन
धर्मक हानि हेतैक
अन्याय-अत्याचार पसरतैक
हम पुनः-पुनः जन्म लेब

तऽ आउ ने
एक बेर फेर
करू ने शंखनाद
कथी लेल
आ कोन आसमे
बैसल छी

युद्ध हमहुँ नहि
चाहैत छी माधव
मुदा जँ
बिना युद्धे
आम लोककेँ
नहि भेटै
पेट भरबा जोग अन्न
देह झँपबा जोग वस्त्र

माथ भरि छाहरि
तऽ युद्ध अनिवार्य
भऽ जाइत अछि केशव

आब एतय
स्त्रीक मान-सम्मानक चीरहरण
आम बात भऽ गेल कृष्ण
आब एकटा द्रौपदी नहि
सहस्त्रो द्रौपदीक आर्त्तनाद
पसरल अछि चारूकात

हे! शाम, दाम, दण्डक भेदक ज्ञाता
हे! कृष्ण, हे! माधव, हे! जनार्दन
बड़ आतुरतासँ
हम प्रतीक्षा कऽ रहल छी
अहाँक अयबाक

भलेहि लड़ऽ पड़य
फेरसँ
महाभारते सन युद्ध
आ ओहिसँ भऽ सकय
एहि धरतीपर
मानवताक स्थापना
तऽ हमरा मंजूर अछि
ओ युद्धो केशव।

दुमुँहा साँप

एकटा होइत अछि
दुमुँहा साँप
दुनू कात मुँह
दुनू दिससँ
आहार-विहार
जखन जेहन हवा देखलक
जखन जेहन बेगरता भेल
ताहि रूपेँ कार्य-व्यवहार

किछु लोको
होइत अछि
दुमुँहे साँप सन
जकरा दुनू दिस
रहैत अछि मुँह
जे समय आ परिस्थिति देखि
प्रत्यक्ष वा परोक्ष
ओकर उपयोग
करैत अछि ओ

एकटा मुँह
जँ वैष्णव
तऽ दोसर साकठ
डोका-काँकौड़सँ लऽ कऽ
मनुखक मासु धरि
भक्षण करैत

एकटा मुँह जँ
सत बाजत
तऽ दोसर सभटा झूठे
असमंजसमे पड़ि जायब
के झूठ
के सत
दुमुँहा साँप
आकि दुमुँहा लोक
होइत अछि
बड़ खतरनाक
जँ समय रहितहि
पकड़मे नहि आयल
तऽ जान बँचब कठिन

जामे-जामे सहचेतब
तामे धरि
भऽ जायत
बड़ देर
कऽ देत तामे धरि
विषसँ सविष अहाँकेँ
सुनैत इहो छी
दुमुँहा साँप
आ दुमुँहा लोकक काटल
पानि सेहो नहि मँगैत अछि
एक गिलास!

कल्पवृक्ष

सुनैत छी
स्वर्गमे छल
अनन्त इच्छाक
प्रतिपूरक कल्पवृक्ष
जे बुझि जाइत छल
मनक सभ भाव
आ प्रतिपूर्ति करैत छल
बिन कहनहि

इन्द्रक सिंहासन
जे अपने इच्छे
समय-कुसमय
डोलैत रहैत छल
आ अनन्त इच्छाबला
स्वयं स्वर्गाधिपति इन्द्र
जिनकर मोन बहलेबाक लेल
मेनका, रम्भा आ उर्वशी सन
चिर-यौवना
करैत रहैत छलीह
भावपूर्ण नृत्य

जतय जीवनकेँ छिजबैबला
दुःख, शोक, मृत्यु सन तथ्य
नहि छल पसरल
जतय अमृतक संरक्षणमे
संरक्षित छल

देवता सभक जीवन

जतय नहि जेठक गर्मी छल
नहि माघ-पूसक जाड़
नहि खेती-बाड़ी छल
नहि सुखाड़
नहि दहार
सुनैत तऽ इहो छी
स्वर्गमे रहनिहार लोककेँ
भूख-प्यासक नहि लगैत अछि
चुल्हा-चेकीक झंझटे नहि
माया-मोहक कोनो फाँसे नहि
तहन कहू
कोन आवश्यकताक प्रतिपूर्ति
करैत छल कल्पवृक्ष

दुनियाँक हारी-बिमारी
धरतीपर
दुनियाँक भूख-प्यास
धरतीपर
दुनियाँक माया-मोह
एतुका लोककेँ
आ कल्पवृक्ष स्वर्गमे

अति ओहियो समयमे छल
अति आइयो अछि
अति चलत साइत संग-संग
अन्त-अन्त धरि...!

संवेदना

राति भरि
निन्न नहि भेल
जगले छी
एकटक तकैत
आँखिमे बसि गेल अछि
ओ अस्सी वर्षक वृद्ध
आ ओकर द्रवित शब्द
''सरकार तीन दिन से
बेदरा बीमार है
पेट में अन्न का
एक दाना नहीं गया
दवाई का तो पता नहीं
हमारी मदद
अब भगवान भी
नहीं करते''

मोन बेचैन अछि
की करी आ की नहि
एक मोन कहैत अछि
बहा दी
अपन सभटा सम्वेदना
बाढ़िक पानिमे
आ सुति रही
निश्चिंतक निन्न
दोसर मोन कहैत अछि
तूँ जीमे कथी लेल
जखन सम्वेदने नहि बचतौ...!

हृदय

कतेक नीक रहितैक
जँ मनुखक देहमे
हृदय नहि रहितैक

नहि सतबितैक दुःख
नहि चिंता घेरितैक
नहि होइतैक प्रेम
नहि घृणा करितैक कियो
जँ मिलितैक नहि लोक
तऽ बिछुरबो नहि करितैक

अपन आन
एहि सभक
कोनो प्रयोजने नहि पड़ितैक
सभ रहितैक
एके ठाम
ई अलग-अलग सिरकी
कियै खसैबतैक लोक

फेर सोचैत छी
जँ मनुखक देहमे
हृदय नहि रहितैक
तऽ नहि प्रेम पनपितैक
नहि विश्वास
नहि साहित्य
नहि समाज

मनुख दुःख-सुख
अनुभव कऽए नहि पबितैक
अपना लेल संसार
बसाइये नहि पबितैक

बर्बर बनि
भटकैत रहितैक
जंगले-जंगले
खोहे-खोहे
शीत-रौदमे भिजैत
जीवनक सभटा ताप सहैत...!

सन्तान

सति पोखरिक महार परहक
अति विशाल
पीपरक गाछपर
नव-नव कोपड़
आबि गेलैक
जे कनिये दिनक बाद
पात बनि पैघ
पुरबा-पछबा बसातमे हहेतैक
बिन बसातो रनरनेतैक

जकरा जड़िमे
बनाओल अछि
पैघ चबुतरा
जाहिपर विराजमान छथि
धुजाधारी हनुमान
जतय मंगले-मंगल
होइत अछि सुन्दरकाण्ड
जतय लगले रहैत अछि
भक्त सभक आन-जान

जकरा डारिपर
हजारो चिड़ै-चुनमुनी
बनेने अछि
अपन-अपन खोंता
जे भीष्म पितामह जकाँ
उठौने अछि कान्हपर
एहि गामक भार-कुभार

जकरा प्रांगनमे
लोक मूड़न-उपनयनक
गीतो गबैत अछि
मृत्युक उपरांत
तेरहो महिनाक
कर्मो करैत अछि
भागवत कथाक
आयोजनसँ लऽ कऽ
शोक सभाक
समापन तक होइत अछि

ओ पीपरक गाछ
कियो आन नहि
अपने भगत बाबाक
सन्तान थिक
जकरा नेनपनमे ओ
खेतक आरिपरसँ आनि
पोखरिक महारपर
लगा देलखिन
अपने हाथे पटा-पटा
नम्हर केलखिन
पैघ जाफरीसँ
घेरि-बेढ़ि
माल-जालसँ
रक्षा केलखिन
जकर जड़ि कऽ
चिकनी माटिसँ भरि
बना देलखिन
ऊँच कऽ चबुतरा

एकटा पहिचान दियेलखिन
सौंसे गाममे
ब्रह्म बाबाक नामसँ

जाहि ब्रह्मबाबाक कृपासँ
बियाहक अठारह सालक बाद
उगना सनक
एकटा बेटा भेलनि
जे अठरह साल पुरैत-पुरैत
जहिना उगल छल
तहिना डुबियो गेल

भगत बाबा
दू दिन-दू राति धरि
पीपरक जड़िमे
बैसल रहलाह जड़ भेल
आ तेसर दिन उठि
फेरसँ जीबय लगलाह
वैह जीवन
जे पहिने जीबैत छलाह

आइ भगत बाबा नहि छथि
हुनका मरना
भऽ गेल कएक साल
मुदा पीपरक गाछ
अपन विशालता पसारने
सती पोखरिक महारपर
एखनो अछि जीवित
गाम देवता बनि पूजित
भगत बाबाक
सन्तानक रूपमे चर्चित।

फोरलेन

गर्दा-गर्दा
भेल अछि शहर
फुलि रहल छैक
दम लोकक
साँसो जोग
स्वच्छ हवा
नहि अबैत छैक
केम्हरोसँ

काटि देल गेलैक
बड़-पीपरक
विशाल गाछ
चिड़ै-चुनमुनी
छिछिया रहल अछि
एम्हर-ओम्हर
खोंता लेल

मंदिर-मस्जिद
ढाहल गेल
भगवान विस्थापित
आस्थका एकोटा चौकठी
नहि बाँचल कतहु
जतय टेकी माथ

दिन-राति
चलैत अछि आरी
दिन-राति चलैत अछि

जे.सी.बी. मशीन
दिन-राति दौड़ैत अछि
बड़का-बड़का ट्रक
शहरमे बनि रहलैक फोरलेन
सड़कक भऽ रहलैक चौड़ीकरण

बनौक फोरलेन
कियैक नहि बनत
विकासक रथ तऽ
एतहिसँ ने दौड़त
सरकारक काम-काजक
लेखा-जोखा
तऽ एतहिसँ
शुरू होयत
एतहिसँ ने बनत
ककरो वर्तमान
ककरो भविष्य

किछु जीवन
उजड़ल अछि अवश्य
जकर वर्तमान आ भविष्य
सड़के कातसँ
शुरू होइत अछि
आ सड़केपर समाप्तो
तकर चिंता
कियैक करत सरकार
अवैध अधिग्रहण कएने छल
जकरा हटा देल गेलैक
कोनो नब बात तऽ
नहि ने भेलैक!

शब्द

एकटा शब्द
ब्रह्म होइत अछि
एकटा शब्द जीव
एकटा शब्द
ने ब्रह्म होइत अछि
ने जीव
ओ होइत अछि
दुनूक सम्मिश्रण

जे कखन
कोन घड़ी
कोन रूप धरि लेत
ककर गरदनि मरोड़ि देत
किछु कहल
नहि जा सकैत अछि

निर्माण आ विध्वंश
चलैत अछि
जकरा संग-संग
सम्मिश्रित शब्द
एक रूपमे
नहि रहैत अछि सदिखन
बदलैत रहैत अछि
ओ अपन रूप
स्थान आ समय
देखि-देखि।

हम नहि चाहैत छी

भादबक उमस भरल
गर्मीमे ठाढ़ रही
बालकोनीक रेलिंग पकड़ने
ठंढा बसातक आसमे
तखनहि ओ पुछलीह
जे अहाँक कोन जाति छी
कोन मूल-गोत्र?

एक घड़ीक लेल बड़
हड़बड़ा गेलहुँ
कोन जाति
कोन मूल-गोत्र
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आकि शुद्र
मोन पड़ि गेल
ब्राह्मण जाति
काश्यप गोत्र
इएह लिखेने रहथिन बाबा
बौआक कुण्डलीमे
बियाहक वेदी तर
कन्यादानक समय
इएह पढ़ेने रहथिन
पंडित जी मायकेँ
पोखरिक घाटपर
पितरकेँ पिण्डदान दैत
इएह पढने रहथिन बाबू
इएह मालाक

एकटा मोती
हमरा तरहत्थीपर राखल गेल
सम्हारिकऽ रखबाक लेल
ओकर भऽ कऽ रहबाक लेल

उच्च जाति
आ उच्च गोत्रक
टिकुली माथपर साटि
छोड़ि देल गेल हमरा
समाजमे अपन वर्चस्व
बनेबाक लेल
अपन पैघत
देखेबाक लेल

जहिना पैघत
देखबैत छलखिन बाबा
अपन गौआँ-घरुआकेँ
अपन जोन-बोनिहारकेँ
बाँगक सूतसँ बनाओल
पाँच धारीक जनउ पहिरि
ओहिमे चानीक पवित्री बान्हि
बीच अँगनामे ठाढ़ भऽ
जखन पढ़ऽ लगैत छलखिन
''ऊँ भूर्भुवः स्वः''
गायत्रीक मंत्र
तऽ ब्राह्मणत्वक तेज
झलकऽ लगैत छलनि
हुनका सम्पूर्णो देहसँ

जे अपनाकेँ ब्रह्म मानि

लिखैत छलाह
दोसरक भाग्य
डोम, दुसाध, मुसहर कियोट
जे कियो
अबैत छलाह अँगना
दूरेसँ झुकबैत छल माथ
''मालिक परनाम''
आ ओ हाथसँ
इशारा करैत
कहैत छलखिन
हट-हट-हट
कने आरो दूर हट
नहि तऽ
छुआ जायब हम
भऽ जायत
हमर ब्राह्मणत्व भंग

बिना कोनो
वाद-विवादकेँ
भऽ जाइत छल
ओ सभ दूर
खटैत छल तैयो
दू सेर बोनिपर
दिन भरि बाबाक खेतमे
जोतैत छल आजीवन
दू कट्ठा हरजोता जमीनपर हऽर
भरैत छलै ओकर माय-बहु
दुइये कट्ठा जमीनपर
भोर-साँझ पानि
उठबैत छल ओ

अपन कान्हपर
जीवन भरिक भार

ललका खड़ाम पहिरि
खट-खट करैत
जखन चलैत छलखिन
बाबा सड़कपर
कात लागि जाइत छल लोक
ओहि दिनमे
एके समाजक
दूटा रूप छल
एकटा राजा
दोसर प्रजा
प्रजा राजाक समक्ष झुकल
झुकल राजाक इच्छा-आकांक्षा लग
पूछ नहि छल ताहि दिन
मानवीय मूल्यक
डर एतेक
जे प्रतिवाद तक
नहि करैत छल कियो
आइ एकैसम सदीक
एहि प्रजातांत्रिक देशमे
जतय जाति आ गोत्र
तासक पत्ती जकाँ
मात्र खेलाइक चीज
रहि गेल अछि राजनीतिमे
राजा आ प्रजा सनक शब्द
मात्र इतिहासक
विषय बनि गेल अछि
पढ़बाक लेल

ओतय फेर कियो
पूछि रहल अछि हमरासँ
हमर जाति आ गोत्र
मन कहैत अछि
हमरासँ जे पुछलहुँ से पुछलहुँ
हमरा बाल-बच्चासँ
नहि पूछब कहियो
ओकर जाति
ओकर गोत्र-मूल

हम नहि चाहैत छी
ओकरा मोन रहैक
ई सभ बात
जे मनुख आ मनुखक बीच
पाड़ैत अछि
विभेदक रेखा
ओकरा तऽ एतबे
मोन रहैक
ओ मनुख भऽ कऽ
मनुखक समाजमे
रहैत अछि
सुख-दुःख बँटैत अछि!

दियाबाती

दियाबातीसँ
ठीक एक सप्ताह पहिनेसँ
शुरू भऽ जाइत छल
हमरा सभक
दियाबातीक तैयारी

काँच करचीमे
गँथैत छलहुँ हम सभ
बँसबिट्टिये बँसबिट्टी सुपती
बनबैत छलहुँ
गोबरक संठीमे लेपटा
गोबरक हुक्का-लोली
पुरना कपड़ाक
गोला बना
पतरका तारमे लपेटल बेला
जकरा टिनही बाल्टीमे राखि
डुबा दैत छलियैक
मटियाक तेलमे भोरे-भोर
आ निहारैत छलहुँ
बेर-बेर ओकरा
कतेक सोखलक ओ तेल

साँझ होइसँ पहिने
पहिरि लैत छलहुँ नबका फराक
आ विदा भऽ जाइत छलहुँ
दलान दिस
सभ संगी-तुरिया संगे

दियाबाती मनबय
छुड़-छुड़ी जरबय
फटक्का फोड़य
बेला खेलय
सुपती जरबय
की कही
कतेक आनन्द छल
ताहि दिनमे
ओहि दियाबातीमे
एकदम सस्ता
कपड़ासँ बनाओल
ओहि फराकमे
बसबिट्टीसँ बीछल
आ कचका करचीमे गाँथल
ओहि सुपतीमे
पुरना कपड़ासँ बनाओल
ओहि बेलामे
अपन संगी-साथी संग
ओहि दियाबातीमे
अपन गाम-घर
अपन अँगना-दलानमे

गुजगुज अन्हरियाकेँ चीरैत
ओहि अमावश्याक रातिमे
ओहि गोबरक हुक्का-लोलीक
जे अस्तित्व आ महत्व छल
से इजोतमे इजोत करैत
आकाशसँ बात करैत
एक-दोसरासँ मुँह फेरैत
एहि शहरी दियाबातीमे कहाँ!

बंदी गृह-1

आइ भोरे-भोर
बालकोनीक रेलिंगपर
कुचरैत छल कौआ
एक क्षणक लेल
मन साकाँक्ष भऽ गेल
पता नहि के अबैत छथि
जिनकर आहटिक
समाद लेने
आयल अछि कौआ

पूर्वमे जहिया पहिने
कुचरैत छल कौआ
दीदी मैंया कहथि
''कुचैर बैसू, कुचैर बैसू
पहिल सनेश तोरे देबौ''
हुनका लगैत छलनि
कौआ किनको
अबैयाक समाद लेने
आयल अछि
आ संयोगवश ताहि दिन
कियो ने कियो
आबियो जाइत छल

द्विरागमन भऽ कऽ
जहन गेल रही सासुर
बड़की सासु हमर
सभ दिन ठकथि

''यै गंगा महरानी
कौआ कुचरैत अछि ओलतीमे
अहाँक बाबू अबैत हेताह''
आ हम प्रतीक्षा करऽ लागी हुनकर
कहियो-कहियो ओ
सत्ते आबियो जाथि

आइ जखन कि फेर
कुचरल अछि कौआ
अतीत खीचि लेलक अपना दिस
धरि तुरत्ते उनटे पैरे हम
घुरि एलहुँ वर्तमानमे
कहलियैक कौआकेँ
''हे! तात हमरा-अहाँक बीच
विश्वासक संबंध अछि पूर्वहिसँ
से हम जनितहुँ
आइ विवशतावश
आग्रहपूर्वक कहि रहल छी
अहाँकेँ जाइ लेल एतयसँ
कारण एहि वैश्विक आपदा
कोरोना कालमे
काल-कवलित होइसँ
बँचबाक लेल
हम सभ बंद छी
अपनहि बंदीगृहमे
जतयसँ बाहर
ने कियो जा सकैत अछि
आ ने जकरा भीतर
प्रवेशक अनुमति छैक ककरो।

बंदी गृह-2

प्रिये! जहिना सूर्य उगलासँ
चान निस्तेज भऽ जाइत अछि
तहिना अहाँसँ अलग भेल
हम निस्तेज छी

प्रिये! जीवनक
एहि मोड़पर
जतय बेगरता अछि
एक-दोसराक सहारा बनब
एक-दोसराक सुख-दुःख बाँटब
हम अहाँ अलग भेल छी

प्रिये! पुनः-पुनः
भोर होइत अछि
आ पुनः-पुनः साँझ
पुनः-पुनः सूर्य उगैत अछि
आ पुनः-पुनः चान
गगन मंडलमे
नक्षत्र अछि विद्यमान
अपना जगहपर ओहिना
ओहिना आमक डारिपर
कुहकैत अछि कोइली
ओहिना बागमे सभदिन
फुलाइत अछि फूल
ओहिना फूले-फूल घुमि-फिरि
मधुपान करैत अछि भमरा

मुदा अहाँसँ अलग

हमरा एहि जीवनमे
कोनो परिवर्तन
नहि होइत अछि कहियो
समय जेना ठहरि गेल अछि
ओतहि ओहि जागहपर
जतयसँ दूर गेल रही हम-अहाँ
प्रिये! हमर ज्ञान-विज्ञान
कोनो पुरातात्विक अवशेष जकाँ
ध्वस्त भेल पड़ल अछि
एहि कोरोना काल लग
आ ई लॉकडाउन
देबाल बनल ठाढ़ अछि
हमरा-अहाँक बीच
जकरा पार करब
जकरासँ पार पायब
ने अहाँक वशमे अछि
ने हमरा वशमे

प्रिये! अहूँ हमरासँ प्रेम करैत छी
आ हमहुँ अहाँसँ प्रेम करैत छी
तेँ अहूँ रहू ओहिये पार
आ हमहुँ रहैत छी एहिये पार
बीचमे बहय दियौक
एहि क्रुर कालकेँ
जामे धरि सामर्थ्य रहैक
ओकरा बहबाक
समयक गति रोकब
ओकरा अपना हिसाबे मोड़ब
नहि अहाँक वशमे अछि
आ नहि हमरा वशमे।

अहाँक राजमे

सरकार हम अहाँकेँ
अपयश नहि दैत छी
धरि यशो देब
से मोन नहि मानैत अछि

जाहि विश्वासक डोर
अहाँकेँ थम्हेने रही
हम हाथमे
लगैत अछि ओहिमे दरारि
आबि गेल सहजहि
जे सभ बन्धन तोड़ि
बहबाक लेल उन्मुक्त
आकुल-व्याकुल अछि

सरकार! जखन मिझा रहल छलैक
रमेसराक घरक दीप
तेलक अभावमे
अहाँकेँ देखलहुँ
निश्चिंत-निफिकिर
एम्हर-ओम्हर
हँसैत-बजैत

सरकार! हम आम-अवाम
अहींक भारे-भरतबे
सोचने रहियैक वैतरणी पार उतरबै
से नाव डुबतै

एहि तरहे मझधारमे
कल्पनो कहाँ केने रहियैक

साधु-संन्यासी प्रधान
एहि देशमे
एखनो लोक
विश्वास करैत अछि
अपनासँ बेशी

कोनो गृह त्यागी
कोनो बैरागीयेपर
ताहि विश्वासक संग
जँ घात होइत छैक
तऽ सत कहैत छी सरकार
बड़ दुःख होइत छैक

बड़ दुःख होइत छैक
जखन दुःखमे
कियो नोर पोछनिहार नहि हो
सुखमे कियो हँसनिहार नहि हो
नहि हो कियो अपन
हर स्थितिमे
संग देनिहार
हँ, से भेल अछि सरकार
अहाँक रहैत
अहाँक राजमे!

त्राहिमाम्

चिराइन गंधसँ
भरल अछि वातावरण
हाहाकार मचल अछि चारूकात
त्राहिमाम्-त्राहिमाम्
हे! अधिपति त्राहिमाम्

जे मनुख
अपन ज्ञान-ध्यानसँ
अभेद्यकेँ भेद्य कऽ देलक
अगमकेँ सुगम कऽ लेलक
ओहि मनुखक ई दुर्दशा
अकल्पनीय, असहनीय
त्राहिमाम्-त्राहिमाम्
हे! अधिपति त्राहिमाम्

जकरा माथपर
ताज विराजैत छल
ओ श्मशानमे पड़ल अछि
मुर्दाक लाइनमे
अपन मुखाग्निक प्रतीक्षामे
श्मशानमे भीड़
इतिहासमे
कहियो-कहियो अबैत अछि
सेहो आयल
हे! अधिपति
त्राहिमाम्-त्राहिमाम्

जे हर घड़ी घिरल रहैत छल

अपनाक अपनत्वसँ
ओकर शवो उपेक्षित
अंतिम क्रियासँ वंचित
गंगामे दहाइत-भसियाइत
अर्रा लागल
कतहु कोनो कन्छैरमे
त्राहिमाम्-त्राहिमाम्
हे! अधिपति त्राहिमाम्

मनुख साधि लेलक
अधिकाँश ग्रहकेँ
नापि लेलक ओकर दूरी
रंग-विरहा सपना देखैत अछि
ओतुका लेल
धरि पृथ्वीक
सभ दशा-दिशा
बेसम्हार भेल अछि
ओकरा लेल
त्राहिमाम्-त्राहिमाम्
हे! अधिपति त्राहिमाम्

कतहु फूटि रहल अछि ज्वालामुखी
कतहु आबि रहल अछि तूफान
कतहु सालक-साल अकाल
कतहु सालक-साल दहार
ओहि सभक बीच
मनुख पिसा रहल अछि
घिसा रहल अछि
त्राहिमाम्-त्राहिमाम्
हे! अधिपति त्राहिमाम्

फाटल वस्त्र

मीता! जे केने रहैक घरहंज
मिझा देने रहैक
घरक सभटा दीप
सैह बनल प्रधानमंत्री
जे लुटने रहैक इज्जत
कएने रहैक
बीच बाजारमे बेनग्न
सैह बनल रक्षामंत्री

जे जरेलक
सम्पूर्णो लाइब्रेरी
ध्वस्त केलक
स्कूल-कॉलेज
सैह बनल शिक्षामंत्री
जे छिनलक थारी महक रोटी
हाथ महक काज
बड़ निर्दयतासँ
मारलक पेटपर लात
सैह बनल खाद्यमंत्री

जे बिन अपराधे
कऽ देलक हत्या
चढ़ा देलक शूलीपर
लूटपाट मचेलक चारूकात
सैह बनल जनकल्याण मंत्री
जे बंद कऽ देलक
घरसँ बाहर जाइक

सभटा बाट
आ खाधि खोधलक
बीच आँगनमे
सैह बनल पथ-निर्माण मंत्री

जे तोड़ि देलक टाँग
बना देलक लोककेँ
लुल्ह-नाँगर
सैह बनल परिवहन मंत्री
जे मुड़मे मुड़ फोरा
लगा देलक
घरमे आगि
आ दूरहि ठाढ़ भऽ
देखलक तमाशा
सैह बनल गृहमंत्री

जे पुरबा-पछबा बसात तककेँ
नहि आबऽ देलक अँगना
सैह बनल विदेश मंत्री
जे साँस लेबाक जोग हवा
नहि रहऽ देलक कतहु
जहर घोरि देलक
सम्पूर्णो वातावरणमे
सैह बनल स्वास्थ मंत्री

मीता! एतेककेँ बादो
हम जीबि रहल छी
फाटल वस्त्रकेँ
टूटल सुइयासँ
सीबि रहल छी।

कर्तव्यक निर्वाह

यमराजकेँ आदेश छलैक
ऊपरसँ
फल्लाँ-फल्लाँक नामे
कटल छैक टिकट
ओकरा आनल जाय अविलम्ब

यमराज विदा भेलाह
यमलोकसँ मृत्युलोक लेल

यमराज पहिल लोक लग गेलाह
ओकरा कहलनि
''चलू अपने ऊपर
बोलाहटि अछि ओतयसँ''
ओ मुनख
अस्सी वर्षक वृद्ध छल
ओ हाथ जोड़ि
करऽ लागल अनुनय
यमराजसँ
देखैत नहि छी
अँगनामे
केहन रमन-चमन अछि
आइ हमरा नातिनक
बियाह छी
अहीं कहू
एहन शुभ कार्य छोड़ि
हम कोना जाइ ऊपर

इहो दिन कि जीवनमे
बेर-बेर अबैत छैक''

यमराज किछु सोचलनि
फेर बढ़ि गेलाह आगू
दोसर लोक लग
ओ छल
साठि वर्षक अधवयसु
ओकरा कहलनि यमराज
''चलू अपने यमलोक
अहाँक समय
समाप्त अछि
एतुका लेल''

ओ पहिने हड़बड़ायल
फेर अपनाकेँ सम्हारलक
आ कहऽ लागल
चिंतामग्न भऽ
''देखैत नहि छी
कतेक परेशानी अछि
बेटाकेँ नौकरी नहि
बेटी कुमारिये
वृद्ध माय-बापक भार
हमरे कान्हपर
अहीं कहू
एहन विकट परिस्थितिमे
सभकेँ छोड़ि-छाड़ि
हम कोना जाइ
अपन कर्तव्यसँ मुँह
हम कोना मोड़ी''

यमराज ओकर
विवशता देखि
विवश भऽ गेलाह
आ बढ़ि गेलाह आगू
तेसर लोक लग
ओ एकटा माय छलीह
नव प्रसूता
यमराज ओतय जा कहलनि
''चलू अपने ऊपर
एतुका समय
समाप्त अछि अहाँक लेल''

ओहि प्रसूताक
कोरामे छल
ओकर नेना
जकरा ओ आगू करैत
करुणाद्र भऽ कहलक
''हे! केहन कठोर छी
दयो नहि अबैत अछि एकरापर
अहीं कहू
जँ हम एकरा
असगर छोड़ि
चलि जायब एतयसँ
तऽ एकर देखभाल
के करत
जँ ओ दोसर बियाह
कओ लेताह
तऽ सतमाय करतैक
मायक बराबरी

हे! हाथ जोड़ैत छी
जाउ अपने एखन
देखबैक बादमे''

यमराजकेँ दया आबि गेलनि
ओ ओहि मायकेँ छोड़ि
बढ़ि गेलाह आगू
चारिम लोक लग
ओ छल नवविवाहित युवा
यमराज ओकरा कहलनि
''चलू अपने ऊपर
बोलाहटि अछि ओतयसँ''
ओ नवविवाहित युवा
हड़बड़ा गेल
हड़बड़ीमे ओकरा हाथक गुलाब
खसि पड़ल
ओ गछारिकऽ
पकड़ि लेलक
यमराजक पैर
आ करय लागल अनुनय
''हे! एतेक निर्दयी
कोना भऽ सकैत छी अहाँ
देखै नहि छी
आइ हमर चतुर्थीक राति छी
फूल भरल सेजपर
प्रतीक्षा कऽ रहल छथि कनियाँ
हमरा तऽ बहुत किछु
कहबाक अछि
बहुत किछु सुनबा लेल
आतुर अछि हमर कान

एहने क्षणक लेल
आतुर छल मोन
नहि जानि कहियासँ
अहीं कहू हम कोना जाइ''

यमराज प्रेमक रंगमे
रंगि गेलाह
फेर बढ़ि गेलाह
पाँचम लोक लग
ओ छल दस-एगारह वर्षक नेना
ओकरा यमराज
पहिने चॉकलेट देलनि
फेर एम्हर-ओम्हरक
बात कहि
मोन बहलेलनि
फेर कहलनि प्रेमसँ
''चलू अपने ऊपर
बोलाहटि अछि''

ओ नेना हाथ महक चॉकलेट फेकि
ठाढ़ भऽ गेल दूर
आ दबारऽ लागल यमराजकेँ
''अहाँकेँ की होइत अछि
हम बुड़बक छी
जे चॉकलेटपर लोभा जायब
बहुत आइस्क्रीम
खेलहुँ हम
अपना जीवनमे
आ अहाँक लोक
कि हमरा लोकसँ

सुन्दर अछि
देखियौ एतुका
हरल-भरल धरती
पैघ-पैघ गाछ
ऊँच पहाड़
आकाशसँ बात करैत बिल्डिंग
अन्तरिक्षमे विचरण करैत विमान
दिमागसँ बात करैत टेक्नोलॉजी

एखन बहुत किछु
करबाक अछि
हमरा अपना जीवनमे
अहाँक चॉकलेट खयबाक
अहाँक दुनियाँ देखबाक
हमरा पलखति नहि''

यमराज हतप्रभ भऽ गेलाह
ओहि नेनाक बात सुनि
आ उनटे पैरे
घुमि गेलाह यमलोक
अपन इस्तीफा लऽ
हाजिर भेलाह
ब्रह्माक आगू
आ कहऽ लगलाह
ब्रह्मा जीसँ
''हे! ब्रह्मदेव
हम हारि गेलहुँ
मनुखक इच्छा-आकांक्षा
ओकर सपना लग
हमरासँ नहि होयत

आब ई काज''
बह्मा जी हँसऽ लगलाह
यमराजक हृदयमे
प्रेम, करुणा, इच्छा-आकांक्षा लेल
जगह उचित नहि
माया-मोह
यमराजकेँ शोभा नहि दैत अछि

''कर्तव्यक निर्वाह
इच्छापूर्त्ति लेल नहि
जीवनकेँ सुचारू रूपसँ
चलेबाक लेल
कएल जाइत अछि

मृत्यु बिना जीवन
महत्वहीन भऽ जाइत अछि
जकरा रहला, नहि रहलाहसँ
अन्तर नहि पड़ैत छैक लोककेँ
जँ लोक मरत नहि
तऽ ने प्रेम बँचत
ने मोह-विछोह
अगबे मनुख बँचत
सहसहाइत नोचि-नोचिकऽ
एक-दोसराकेँ खाइत।

आस्था

सप्तमीक गहमा-गहमी भरल साँझ
कतहु जिलेबी-सिंघाड़ा छनाइत
कतहु छोला-चाट बिकाइत
कतहु फुक्का उड़ियाइत
कतहु बाँसुरी बजैत
सभ छल हलचल
सभ जगह चहल-पहल

ओहिसँ हटिकऽ
कने दूर
किछु लोककेँ देखलहुँ
ओहिना जमा भेल
जहिना चीनीपर
जमा भऽ जाइत अछि चुट्टी
मूड़ीमे मूड़ी सन्हियेने
लोकपर लोक खसैत

मन कहाँ मानलक
चलि अयलहुँ
किछु खिस्सा सुनबाक लेल
ओहि भीड़क हिस्सा
बनबाक लेल
आँखि जे किछु देखलक
कान जे किछु सुनलक
ओ अप्रत्याशित तऽ नहि
कौतुहल भरल छल अवश्य

गरदनिमे चारि धाड़ीक
लाल-पीयर-हरियर रंगक
रत्न-महारत्न मूँगा-मोतीक
माला पहिरने
सुफियाना कट
दाढ़ी कटेने
ओहने अंगवस्त्र पहिरने
माथपर लैस लागल
हरियर पोलिस्टरक
कपड़ा लपेटने
अपना आपकेँ
साँइ कहैत
ओ बैसल छल
बेस नम्हर आसनीपर
सभक भाग्य विधाता
सभक दुःखहर्ता

बेरा-बेरी लोक सभ
अपन हाथ आगू करैत छल
उत्सुकतावश
साँइ दिस तकैत छल
ओ पहिने हाथ देखैत छल
फेर आँखि मुनैत छल
तकर बाद
ऊपर तकैत
बजैत छल
''बच्चे! तुम्हारे भाग्य में
शनि वक्र और राहु
सामने खड़ा है

कुछ नहीं हो सकता तुम्हारा''

लोक हड़बड़ाइत छल
घबराइत छल
पकड़ैत छल
बाबाक पैर
''कुछ तो उपाय बताइए बाबा''
बाबाक पैघ बक्सामे
बन्द छल
सभक समस्याक समाधान
वक्र शनि आ सम्मुख राहु
चुटकी बजबितहि
आबिकऽ बन्द भऽ जाइत छल
बाबाक बनाओल
औंठीमे

ककरोसँ दू सए
ककरोसँ तीन सए
ककरोसँ तऽ सए-पचास
रुपैया लऽ बाबा
समाधान प्रस्तुत करैत छलाह
सपना बँटैत छलाह
लोक मगन भऽ
घर जाइत छल
विपत्ति-बाधा
बाबाकेँ सौंपैत छल
देखितहि-देखितहि
बाबाक भरि गेल
सभ बगुली
रुपैया-पैसासँ

बाबा खुश
यजमान खुश
मुदा हम खुश नहि छी
एक मोन कहैत अछि
फटकारी एहि बाबाकेँ
आ लोककेँ बुझाबी
ई कोनो साँइ नहि
एकटा ढोंगी अछि
ठक अछि
जे खून-पसेनासँ
कमायल पैसा
लोकसँ ठकैत अछि
झूठ-मूठक रत्न पहिरा
सपना बुनैत अछि

दोसर मोन कहैत अछि
कतेक प्रसन्न भऽ जाइत अछि
ओ लोक
जकरा हाथमे
औंठी पहिरा
माथपर हाथ राखि
बाबा कहैत अछि
''जाओ बच्चे,
तुम्हारा कल्याण हो''
पानिक बुलबुला जकाँ
क्षणिके सही
सपनाक पंख तऽ
लागि जाइत अछि
ओहि देशमे
जतय नार-पुआरसँ छारल

चिकनी माटिसँ
लेबल-मूनल
मूर्तिकेँ हम
दुर्गा, काली आ सरस्वती-लक्ष्मी मानि
कल जोड़ि सभ अपराधक लेल
छमा माँगि लैत छी
सभ मनोकामनाक पूर्त्ति लेल
आँचर पसारि दैत छी
आस्थामे सराबोर
पाथरोक गणेश जीकेँ
दूध पियबैसँ
नहि रोकि पबैत छी अपनाकेँ

ओतय ओहि देशमे
चलैत-फिरैत मनुख
इन्द्रजाल पसारैत अछि
चलैत-फिरैत मनुख
ओहि इन्द्रजालमे फँसैत अछि
तऽ आश्चर्यक कोन बात

आस्था कखनो
आदमीकेँ
देवता बना दैत अछि
आस्था कखनो
आदमीकेँ
दानवो बना दैत अछि
आस्था कखनो
आदमीकेँ
आन्हरो बना दैत अछि।